अध्याय-३
ऐतिहासिक उपन्यासों में नारी-पात्रों की विशिष्टता

- उपन्यासों के तत्त्वों में पात्र या चरित्र-चित्रण का स्थान
- चरित्र-चित्रण के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के विचार
- चरित्र-चित्रण की विविधता
- समाज में नारी व्यक्तित्व की उद्धोपयोग
- औपन्यासिक साहित्य में नारी का स्थान
- वर्माजी के ऐतिहासिक उपन्यासों में नारी का स्थान
- गढ़ बुंदीर उपन्यास के नारी-पात्रों की विशिष्टता
- विराट की पद्ममिनी उपन्यास के नारी-पात्रों की विशिष्टता
- अचनाक उपन्यास के नारी-पात्रों की विशिष्टता
- झौंपी की रानी उपन्यास के नारी-पात्रों की विशिष्टता
- भृगुपति उपन्यास के नारी-पात्रों की विशिष्टता
- अहिल्याबाई उपन्यास के नारी-पात्रों की विशिष्टता
- भृज-विक्रम उपन्यास के नारी-पात्रों की विशिष्टता
- महारानी दुर्गावती उपन्यास के नारी-पात्रों की विशिष्टता
- रामायण की रानी उपन्यास के नारी-पात्रों की विशिष्टता
- मुसाहिबजुल उपन्यास के नारी-पात्रों की विशिष्टता
- माधवजी सिद्धिया उपन्यास के नारी-पात्रों की विशिष्टता
- दूधे कॉन्टे उपन्यास के नारी-पात्रों की विशिष्टता
अध्याय-३
वर्मा०जी के ऐतिहासिक उपन्यासों में नारी-पात्रों की विशिष्टता

पात्र या चरित्र-चित्रण का स्थान

सामान्यतः उपन्यास की रचना करते समय उपन्यासकार को कोई विशेष निर्देश नहीं करना पड़ता है। किन्तु उपन्यास रचना के कुछ निश्चित आधार बन गये हैं। जिनको बिना रचना करते हुए उपन्यासकार को अपनी रचना करनी पड़ती है। उपन्यास का इन आधारों को तत्त्व कहा जाता है। प्राध्यात्मक: उपन्यास के छ: तत्त्व माने गये हैं। (१) कथा वस्तु (२) पात्र या चरित्र-चित्रण (३) संबंध का कथाप्रमाण (४) देशकाल या वातावरण (५) भाषा-शैली (६) उद्देश्य।

उपन्यास की रचना करते समय इन सभी तत्त्वों की आवश्यकता पड़ती है। किन्तु पात्र या चरित्र-चित्रण उपन्यास का प्राण है। आधुनिक युग में वह मान्यता हुई होती जा रही है कि चरित्र-चित्रण का उपन्यास में उतना ही महत्व है, जितना की कहानी का होता है। उपन्यास के पात्रों पर प्रकाश डालते हुए डॉ. रंजेन ने कहा है—

"जिस प्रकार प्राणी के लिए प्राण अविभाज्य तत्त्व है उसी प्रकार उपन्यास के लिए पात्र रूपी प्राण अविभाज्य है।"

उपन्यास के पात्र उसी प्रकार के होते हैं जिस प्रकार समाज में मानव होते हैं। पात्रों का व्यक्तित्व ही चरित्र-चित्रण कहलाता है। पात्रों का वर्णन उपन्यासकार भिन्न भिन्न प्रकार से करते हैं। उपन्यास में पात्रों का चित्रण करते समय उपन्यासकार को उसमें सजीवता, स्वतंत्रता और क्रियाशीलता का निर्माण करना चाहिए। दृ. रणजीत संग्राम चरित्र-चित्रण को उपन्यास में होना अविभाज्य तत्त्व मानते हुए लिखते हैं—
“पात्र और उनके चित्र-चित्रण के बिना उसका उपन्यास ‘उपन्यास’ नहीं कहला सकता और चाहे कुछ भी कहलाए क्योंकि उपन्यास का मूलाधार मानव और उनका चरित्र है।”

अंतः: उपन्यास में पात्रों का होना अत्यंत आवश्यक है। उपन्यास के पात्र सजीव, स्थायी एवं क्रियाशील हो यह उसकी अनिवार्य आवश्यकता है।

♦ चरित्र-चित्रण के सम्बन्ध में विभिन्न विधानों के विचार

हिंदी साहित्य के विभिन्न विधानों के पात्र या चरित्र-चित्रण के सम्बन्ध में अपने अनुभव, ज्ञान एवं सृष्टि वृद्धि से अपने अलग - अलग विचार व्यक्त किये हैं। उपन्यास सम्राट गुप्त के प्रमुख ने पात्र या चरित्र-चित्रण के सम्बन्ध में कहा है—

“मे उपन्यास को मानव चरित्र का पिता मात्र समझता हूं। मानव जीवन पर प्रकाश डालना और उनके सख्तों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्त्व है।”

हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक रणजीत सर्फा चरित्र-चित्रण के सम्बन्ध में अपने स्थायी विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं—

“जिनके साथ औपन्यासिक घटनाएँ घटित होती है अथवा प्रत्यक्ष या परेशान रूप से सम्बन्धित होती है, जो उनसे विकास पाते हैं तथा उन्हें विकास देते हैं, वे प्राणी मनुष्य हो या मनुष्यता उपन्यास के पात्र कहलाते हैं।”

चरित्र-चित्रण को व्याख्या करते हुए एम.एल. रायणन ने लिखा है—

“चरित्र-चित्रण से आशाहृत है कि किसी कथा के पात्रों का अंकन कुछ इस प्रकार की स्वभावितता के साथ किया जाय जैसे कि मैं निजी पुस्तक के पृष्ठों से परे मूर्त होकर जीवन वैयक्तिकता ग्रहण कर ले।”

♦ पात्रों की अपनी कहानी का अर्थ है—

“पात्रों को इस प्रकार अंकित करना है जिसमें वह जीवन के अनुरूप प्रतीत हो। यह गुण न भ्रमण के अन्तर्गत आता है और न आपेक्षित के। इसका तत्त्वर्थ
यह हो सकता है कि पात्र ऐसे जीवन और स्वभाविक हों जैसे कि यथार्थ जीवन में होते हैं। उन पात्रों का चरित्र-चित्रण वास्तविक जीवन के अनुसार होना उचित है।”

अंतत: हम कह सकते हैं कि पात्र लेखक के हाथ की कठिनाई न होकर स्वतंत्र और स्वच्छन्द हो क्योंकि अधिक अंशुश लगाने से वे निर्जीव हो जाते हैं। उन्हें अपना-अपना जीवन जीने चाहिए। चरित्रान्वयन की सफलता इसी में निहित है कि उपन्यास की घटनाएं एवं सूक्ष्म विवरणों के विस्मृत हो जाने पर भी उसके पात्र हमारी स्मृति में जीवित रहते हैं।

• चरित्र-चित्रण की विधियाँ

उपन्यासकार अपने उपन्यासों में पात्रों का चरित्र-चित्रण करने के लिए विभिन्न विधियों का प्रयोग करता है। उनमें से जो प्रमुख विधियों है, उनका संहेत इस परिचय में हिस्सा है।

1. विश्लेषणात्मक विधि:

इस विधि के अन्तर्गत उपन्यासकार स्वयं अपनी ओर से चरित्र-चित्रण करता है। लेखक पात्रों के चरित्र, आचार-विचार, व्यवहार आदि का वर्णन अपनी ओर से करता है, जिसके माध्यम से पाठक को पात्रों के विश्वास में जानकारी प्राप्त होती है। अधिकांश उपन्यासों के पात्रों का चरित्र-चित्रण उपन्यासकार इसी विधि से करता है। चरित्र-चित्रण की यह प्रणाली अधिक प्रचलित मानी गई है। जैसे—

“मनू चपल, हठी और बहुत देनीयुद्ध की बी। कम आमय की होने पर भी वह इतने हुनरों में उन दोनों बालकों से बहुत आगे निकल गई।”

2. अभिव्यक्तिक विधि:

इस विधि के अन्तर्गत उपन्यासकार स्वयं अपनी ओर से किसी पात्र के संबंध में नहीं कहता बल्कि पात्र आपसी बातचीत द्वारा उसके पात्रों के संबंध में अनेक बातों की
सूचना देते हैं। इसमें नाटकीयता भी अधिक रहती है। इस विधि के द्वारा पाठक का चरित्रावलन करने में लेखक को पर्याप्त सुविधा रहती है। जैसे —

“मल्हर ने उस प्रांत के दो मामलतारों को तलवार के बारे से घायल कर दिया है। अब कोई सरदार उसके सामने जाने का साहस नहीं करता। बहुत बिगड़ता चला जा रहा है।”

(3) आत्मकथात्मक विधि:

इसके अनुसार लेखक न केवल एक ही पाठ को प्रमुखता देता है बल्कि उस पाठ द्वारा अपनी मानसिक प्रतिक्रियाओं और अनुभवों को बर्खास्त करता है। कभी-कभी लेखक अपने जीवन का न लेकर किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन को लेता है। इसमें लेखक ऐसे चरित्र को लेता है, जिसमें वे सरलता से रंग भर सके।

(4) संवादात्मक विधि:

पाठकों के चरित्र-चित्रण के लिए यह विधि सबसे महत्वपूर्ण है। इसके द्वारा चरित्र-चित्रण में सजीवता उत्पन्न की जाती है। संवाद या कथोपकथन में जब पाठ एक-दूसरे से बातचीत करते हैं तब उसके चरित्र के सूक्ष्म पहलु भी उभरते हैं। जैसे —

“नहीं मुझे कुंजर से पूछा, ‘आप कौन हैं?’ कुंजर के मुँह से ख्वाब-पूर्वक निकला, ‘राजकुमार’, लोचन ने गर्व के साथ कहा, ‘यह है दलीपनगर के महाराजाधिराज के कुमार राजा कुंजरसिंह।”

(5) चरित्रात्मक विधि:

इस विधि के अनावरण लेखक किसी पाठ का चरित्र-चित्रण करते समय उसकी देशभूमि, आकृति और वातावरण का हंग आदि का चरित्रात्मक करता है। चरित्र - चित्रण की यह बहुत महत्वपूर्ण विधि है क्योंकि लेखक अपनी आदत से उसका मनगढ़त वर्णन कर सकता है। जैसे —
“तारा का रंग निखरा हुआ था । एक-सी आँखें, एक-सी नाक, एक-सी चेहरे
की बनावट । ख्वेर में भी अधिक अंतर न था, हाथों में जकर अंतर तथा, भाई के हाथ
की आँखियाँ कुछ मोटी थी और पंजा चोड़ा था । वहनी की आँखियाँ थी पतली और
पहुँचा मूंदे हुए कमल-सवृंखला।”

(५) संकेतात्मक विधि:

लेखक चरित्रों का सीधा वर्णन न करके सांकेतिक वंश से उनके संबंध में बताते
है । इस विधि के अंतर्गत लेखक अपने व्यक्तित्व को छिपाना चाहता है । इस विधि का
विकास उपन्यास के आधुनिक रूप के साथ है । इस विधि की भाविक संभावनाएँ
अन्यथिक है।

(६) मनोवैज्ञानिक विधि:

मनुष्य के मन के भाव समय-समय पर बदलते रहते हैं । कभी वह खुश होता है
तो कभी दुःखी, उदास होता है । कई ऐसे उपन्यासकार हैं जिन्होंने अपने उपन्यासों के
माध्यम से मानव मन की गुणियों को सुलगाने का प्रयास किया है । अलेज,
जैनेन्ट्रूकार, वशपात आडि ने इस विधि का उपयोग अपने उपन्यासों में किया है।

अंतोगत्वा हम कह सकते हैं कि इन विधियों का उपयोग कोई भी उपन्यासकार
कर, वह अपने उपन्यास में पात्रों का चरित्र-चित्रण करते समय किसी न किसी रूप में
आवश्यकतानुसार या अपनी सीमा के अनुसार करता है।

❖ समाज में नारी व्यक्तित्व की उद्घोषणा

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । जीवन की प्रगति के लिए नर और नारी एक-
दूसरे पर अपलोधित है । एक के अभाव में दूसरे का असित्व नामुमकिन है । इसीलिए
तो इंरन ने इस सृष्टि के विकास के लिए दोनों को आधार करने हैं। बाइबिल में नर
और नारी के बारे में इस प्रकार लिखा है –
“परम्परा परमेश्वर ने कहा कि मानव को अकेले रहना उचित नहीं, मैं उसके लिए एक मददगार और साथी बनाऊंगा और परमेश्वर ने आदम को गहरी नींद सुलाव दिया और उसकी एक पस्तकी से निकलकर उसी स्थान को मांस से भरा। इसकर ने जिस पस्तकी को नर के शरीर से निकाला था उसमें से नरी को बनाया।”

मानव समाज के इतिहास में नरी शरू से ही अपना बहुमूल्य रंगोला बनाये बहुत हैं। नरी के इतिहास पर ध्वस्तिपात करते ही जानने का मिलता है कि यह समाज को प्रेम, प्रेरणा, शक्ति, सहायता एवं विश्वास सभी चुंबक सम्भ-सम्भ में लेती रही है। मानव जब भी जीवन संसार में असफल हुआ, तब उसने सहायता प्रदान कर परिस्थितियों को सुलझाने का प्रयास किया है। महानायक भक्ति, रानी दुर्गावती, अहिल्याबाई आदि कई नारियों को गई, जिन्होंने अपना अभूतपूर्व शौर्य विख्यात और वह भारतीय इतिहास में अमर हो गई।

• अंत्योपासिक साहित्य में नरी का स्थान

उपन्यास में पात्रों का महत्व अधिक होता है। पात्रों के प्रभावण: यो भेष किये जाते हैं — प्रथान पात्र तथा गौण पात्र। उपन्यास के प्रथान पात्र संपूर्ण कथानक का नेतृत्व करते हैं। प्रथान पात्र में नायक, नायिका, सहायक, सहायिका आदि होते हैं।

हिन्दी उपन्यास के विकास क्रम नायिका के महत्व पर विधि विचार जाए तो यह स्पष्ट करता पड़ेगा कि नायक के समान नायिका के चरित्र के आधार पर उपन्यासों की रचना करने की एक सुसंगत प्रवधक है। उपन्यास की नायिका उपन्यास रचना के केन्द्र बिन्दु बनकर अनेक उपन्यासों में प्रकट हुई है और उपन्यास का कथानक नायिका के चारों ओर प्रभावित है। भारतेन्दु हरिचन्द्र से लेकर आधुनिक काल तक के सभी उपन्यास लेखकों ने नारी को मानवता की पूर्वतमूल्य के रूप में चित्रित किया है। उपन्यासकारों का विशेष ध्यान नारी-समस्या, उसकी प्रगति और सामाजिक संरचना में उसे
उचित स्थान देने की आवश्यकता है। डॉ. बुशेश्चंद्र गुप्ता नायिका की पत्रिता पर विचार करते हुए लिखते हैं -

"उपन्यास के नारी-पात्रों में कोई न कोई नारी ऐसी होती है, जो कथानक का नेतृत्व करती हुई उसे अंतिम उद्देश्य तक ले जाती हुई प्रतीत होती है। इसी प्रमुख नारी-पात्र को नायिका कहते हैं।" 13

वर्माजी के ऐतिहासिक उपन्यासों में नारी का स्थान

भारतीय संस्कृति के अनुसार श्री बुशेश्चंद्र वर्मा ने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में नारी-पात्रों को चित्र अंकित किया है। वर्माजी ने अपने उपन्यासों में बुशेश्चंद्र के प्रतीत इतिहास की किसी न किसी तेजस्वी नारी की जीवन-गाथा को लिया है। सिवारामस्थर प्रसाद उनके उपन्यासों में नारी के स्थान को लेकर लिखते हैं -

"बुशेश्चंद्र वर्मा आपि में नारी के प्रति अत्यन्त जागरूकता देखते हैं, जिसका आवश्यक कारण है, वे अशक्त और बीन-हीन समझी जानेवाली नारियों को गोरख प्रतिष्ठान एवं स्वतंत्रता की सच्ची छवि और युगानुकूल उपन्यास नारी आन्दोलन मूलभूत कारण है।" 14

बुशेश्चंद्र वर्मा ने समाज के समस्त जीवन को चित्रित करने तथा पात्रों के आचरण के माध्यम से अपने विशिष्ट जीवनदर्शन की स्थापना के लिए विशिष्ट नारी पात्रों की उद्धृत मात्रा की है। डॉ. ग्राहिका प्रसाद सचेतना लिखते हैं -

"वर्माजी ने नारी-पात्रों का चित्र-चित्रण अत्यन्त मनोहर करते साथ किया है। उनके नारी-पात्र ही विशेष रूप से आकर्षक बन पड़े हैं। ... उन्होंने प्रायः नारी को पुरुष की प्रेरणा शक्ति के रूप में चित्रित किया है और नारी को पुरुष की अपेक्षा सम्मान एवं आदर प्रदान किया है।" 15
संक्षेप में हम कह सकते हैं कि ब्राह्मणी ने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में नारी के महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किये हैं। उनकी नारियों पुरुष की अपेक्षा किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। उन्होंने ‘कचनार’ में अचलपुरी से स्पष्ट कहलाया भी है —
“विख्यात पुरुषों की अपेक्षा अधिक वृद्धिशाली और चटुर होती है।”

❖ गद्दू कुंडाज उपन्यास में नारी-पात्र की विशेषता

प्रस्तुत उपन्यास के नारी-पात्रों में तारा को हम प्रमुख नारी-पात्र के अंतर्गत मिल सकता है। वह संपूर्ण उपन्यास में नायिका के रूप में उभरकर सामने आती है। गौण नारी-पात्रों में हमेशा और एवं मानवता का नाम लेने सकते हैं। उनकी चरित्रिक विशेषता हम इस प्रकार देख सकते हैं —

(२) तारा:

गद्दू कुंडाज उपन्यास में तारा एक नायिका के रूप में उभरकर हमारे सामने आती है। जो उपन्यास का सबसे महत्त्वपूर्ण एवं प्रमुख स्त्री पात्र है। उसके चरित्र की कुछ महत्त्वपूर्ण विशेषतायें इस प्रकार है —

तारा सौंकळचरी नारी है। वह विषयुक्त की इकलौती बेटी और अभिनवत की बहन है। तारा और अभिनवत जूझता है। उन दोनों की सृष्टि-शक्ति विकसित एक दूसरे से मिलती रहती है। उपन्यासकार उसके सौंदर्य का वर्णन करता हुआ लिखता है —

“तारा का ऐसा निगराना हुआ था। एक-सी ओँक्रें, एक-सी नाक, एक-सी चेहरे की बनावट। तारा की ओँक्रें शांत, स्थिर, बढ़-बढ़े पलकोंवाली बड़ी निरंतर थी। उन ओँक्रों के किसी कोने में छल, कपट या अविश्वास की फिरियंट छाया भी नहीं मिल सकती थी।”

प्रेमी विवाहक भी उसके सौंदर्य का वर्णन करता हुआ कहता है —

“तारा मुझको संसार भर में सबसे अधिक सफ़ुल, मुँहुल, मनोहर और पवित्र मालूम पड़ती है।”
दासा में स्वीत सुवास कोमल भावनाएँ देखने को मिलती है। एक बार उसे सौंप काटता है। वैद्य को भुलाया जाता है। किंतु वैद्य के उपचार में देर लगाने पर उसकी जान खतरे में पड़ सकती थी। उस समय कोई भी उसकी रक्षा का प्रयास नहीं करता। तब विवाकर अपनी जान को जोखिम में डालकर उसकी रक्षा करता है। तब से उसकी कोमल भावनाएँ विवाकर की ओर अधिक झुक जाती है। अतः जब वह मंदिर में पूजा चढ़ाने जाती है। तब वह भगवान से प्रार्थना करती हुई कहती है -

"जिस पुफुष ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर उसको बचाया था, वह दीर्घजीवी हो।" 16

एक बार जब विवाकर हेमवती की रक्षा करता हुआ घायल होता है। तब वह उसका भावायश में आकर लिपट जाती है।

tारा आवश्यक्ष्य प्रेमीका के रूप में भी हमारे सामने आती है। वह एक बार विवाकर को अपना हाथ बंद भेंटी है, तब से वह उसकी हो जाती है। हर बार वह उसी के दरार में सोचती रहती है। एक बार जब उसका प्रेमी विवाकर उसको कहता है -

"तारा, हम-तुम दो भिन्न जातियों के हैं। हमारा - तुम्हारा मिलाप असंभव है। तुम अपना नाश मत करो। तुम आकाश नक्षत्र हो और मैं पृथ्वी का कृमि-कोट।" 15

फिर भी तारा विवाकर के इस प्रकार के कथन का संध्य-सा उत्तर देती हुई कहती है -

"आप मेरे धर्म, मर्म और देव है। व्या पूजा भी न करने देंगे।" 19

tारा के चरित्र की एक अन्य विशेषता है, वह है उसकी निर्भरता। उसके प्रेम के आगे वह किसी की भी पश्चात नहीं करती। हेमवती की रक्षा करते समय घायल हुए विवाकर को वह लिपट जाती है। विवाकर जब उसे जाने के लिए कहता है, तब वह निर्भरता से कह देती है -
“जब तक आपकी मरहम-पट्टी नहीं हो जाएगी, मैं न जाकरी, जाहे कोई मुझे मार डाले।”

तारा एक साहसी एवं समर्पित नारी के रूप में भी हमारे सामने आती है। जब वह सुनकर है कि दिवाकर देवाश्री के तलाघर में बन्द कर दिया गया है और वह अस्थाय है। तब वह दुर्गत ही घोंघे पर सवार होकर देवरा की ओर प्रस्थान कर देती है। वह अस्थाय दिवाकर को तलाघर से बहार निकालती है। वह अपने व्यावहार में सब कुछ समर्पित करने के लिए तैयार है। अत: वह दिवाकर को तलाघर से बहार निकालते समय अपनी आदर्श साधी को फांककर उसकी मस्ती बनाकर अंदर जाती है और धावल दिवाकर को बहार निकालती है। फिर दोनों किसी अनजान जगह पर चले जाते हैं। यहूँ उसका प्रेम सफल होता है।

इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में तारा एक सफल प्रेमिका के रूप में हमारे सामने आती है। उसके प्रेम में ल्याने की भावना है। सियारामशरण प्रसाद उसके मथुर व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए लिखते हैं—

“वर्माजी ने तारा के प्रेम को संयमित पर्नु अधिक विस्तार से उपस्थित किया है क्योंकि उनका आदर्श, भास्त्रीवता का गर्व, उसके चरित्र से ब्यक्त होता है।”

(२) हेमचंदी:

ग़लोंदार उपन्यास की बुसरी-प्रमुख स्वीकार है हेमचंदी। महर्षी के सोहनपाल बुंदेश के यह इक लोटी पुजी है और सहजेदर की बहन है। हेमचंदी को प्राप्त करने की लालच में कुंडर विनिव हो जाता है। उसके रूप-सौंदर्य का वर्णन करते हुए नागदेव सोचता है—
“कोमल अंग है, उठली हुई बड़ी आँखें हैं, सोने का रंग है, गहरी तोड़ी है, सीधी नाक है। मैंने मुसकराते हुए भी देखा लिया है। सीधर्य! अपूर्व सीधर्य है।”

हेमवती के रूप-सीधर्य से प्रभावित होकर खंगार राजा हरमतसिंह का पुत्र नामदेव उसे प्रेम करने लगता है। वह किसी भी तरह से उसे पाना चाहता है।

हेमवती के चरित्र की एक विशेषता यह है कि वह सहज्य है। कुंडार में तारा के साथ रहते हुए उसे उसके साथ लगाव हो जाता है। अतः जब कुंडार में नामदेव हेमवती से विवाह के लिए प्रस्ताव रखता है तब वह उसको फटकार देती है। कुंडार से उसे शुरू हो जाती है। किन्तु फिर भी तारा के साथ उसका अनन्य लगाव है। वह तारा को कहती है।

“यदि किसी के लिए यहाँ रहने को जी चाहता है, तो तुम्हारे लिए तारा। नहीं तो इसी विषय चले जाने की इच्छा होती है। तारा, जब हम लोग यहाँ से चले जाएंगे, तुम्हारे कैसा लगेगा।”

आजादी की नारी के रूप में भी उसका चरित्र हमारे सामने आता है। वह अपने पिता की हरेक बातों का पालन करती है। अपने पिता के द्वारा बताये पूर्ण पुष्पपाल के साथ वह विवाह कर लेती है।

उसके चरित्र की कोई कमजोरी हो तो वह है उसका आत्माभिमान। राजकुमार नामदेव उसे हृदय से चाहता है। किन्तु हेमवती उसकी ओर चलकर भी आकर्षित नहीं होती है। जब नामदेव विवाह प्रस्ताव उसके सामने रखता है तब वह उसे फटकाती हुई कहती है।

“मैं कस्तियों - कल्याण हूँ। बूँदेला हूँ, आप खंगार हैं। जाएंगे।”

कुंडार से बचता लेने के लिए वह सहज्य, सोहनपाल इत्यादि का उकसाती भी है। उनकी हेमवती कहती है।
“यदि चल से नहीं मार सकते हो, तो छल से मारे —पंचम कुल की अपकीति को किसी प्रकार धो ना।”

इस प्रकार गड़-कुंडाढर उपन्यास में हंगामती का चरित्र उपन्यास में अपना नीति महत्व रखता है। खंगारों और चंद्रेलों का युद्ध इसी के लिए होता है।

(3) मानवति:

गड़ कुंडाढर उपन्यास में मानवति का पात्र भी अपना नीति महत्व रखता है। मानवति के खंगार राजा हुरमतसिंह की लड़की है। वह नामदेव की बहन है और अभिनव की प्रेमिका। मानवति के रूप-सीद्ध का वर्णन करते हुए उपन्यासकार लिखते हैं—

“षा इसका अभिनव के सदृश ही था। अंग्रेज़ बड़ी-बड़ी और बहुत ही काली थी। अंग्रेज़ में मदृ उतरारा-सा पड़ता था। आयु में अभिनव से एकाध वर्ष बड़ी होगी, परंतु वह उसकी भरी हुई न थी। मोतियाँ की माला गले में ढाले हुए थी और रंग-विंगो पुष्पों की माला घोड़ों में मूँढी हुई थी।”

उपन्यास में मानवति के चरित्र का इतना विस्तार से वर्णन नहीं किया गया है। फिर भी एक बात तो सही ही है कि उसके कारण ही अभिनव चंद्रेलों का साथ देता है। और सभी खंगारों का विनाश करता है।

मानवति के चरित्र का एक विशेषता है, उसका निश्चय एवं निर्धारित प्रेम। वह अभिनव पाँड़े को ह्रदय से प्रेम करती है। जब उसकी माता उसके विवाह की बात करती है और अभिनव स्वयं के बलिदान की बात करता है। उस समय उसका निश्चय हर बार उठता है—

“मुझे तो एक देवता का हृदय है। अनेक देवताओं के पूजन के लिए मैंने जन्म नहीं लिया है।”
मानवति का चरित्र एक आत्मकारी नरी के रूप में भी उभरकर हमारे सामने आता है। वह अनिवार्य पांडे के हवय से प्रेम करती है किन्तु फिर भी वह अपने माता-पिता के कहने पर प्रधानमंत्री गोपीचंद के पुत्र राजघर से विवाह कर लेती है।

मानवति में दृढ़ता नहीं है, वह भीरू नागर है। एक और वह अभिवाद ने कहती है—

“तुम जो कहोगे, सो कहेंगी।”

किन्तु, इतनी और अभिवादतारा बनकर जब उसे विवाह मंडप में लेने जाता है। और उसे तुरंत अभिवाद भगद चलने के लिए कहता है तब वह कहती है—

“भी क्या कहेंगे, क्या न कहेंगे, कुछ समझ में नहीं आता। इच्छा होती है कि विष खाकर मर जाए। पांडे, आज इतनी भीड़ यहाँ पर है कि भागते ही हम-तुम दोनों पकड़कर मार डाले जाएँगे।”

इस प्रकार तारा का चरित्र एक निसारी नरी के रूप में उभरकर हमारे सामने आता है।

विराट की पद्ममिल उपन्यास में नरी-पात्रों की विशिष्टता

प्रस्तुत उपन्यास में प्रधान नरी—पात्र के अत्याधुनिक हम कृमुद को ले सकते हैं।

गीण नरी-पात्र में गोमती का नाम उल्लेखनीय है। नरी—पात्रों की विशिष्टताओं को हम निम्न रूप से देख सकते हैं।

(१) कृमुद का चरित्र-विचरण:

विराट का पद्ममिल कृमुद प्रस्तुत उपन्यास के स्वी पात्रों में सबसे प्रमुख है।

सम्पूर्ण कथानक आवद से लेकर अन्त तक उसके चरित्र के आसपास ही धूमता रहता है।

वह बॉयी गोडे मर्पति सिंह की पत्नी है। कुल मिलकर यह उपन्यास की नाभिका के रूप में उभरकर हमारे सामने आती है। उसके चरित्र की जो प्रमुख विशेषताएँ हैं, वह इस प्रकार है।
कुमुद अद्वितीय सौंदर्यमय नारी है। उसके अकालपनिक रूप-सौंदर्य के कारण ही हिन्दुओं में विश्वास है कि वह दुर्गा का अवतार है। उसके अनुरूप रूप-सौंदर्य की बात चारों ओर फैल जाती है। उसके रूप-सौंदर्य के बारे में वर्णकथा लिखती हैं।

"बालिका रोंगी की लड़की में इतना रूप इतना सौंदर्य कभी न देखा गया था। गाँव के मंदिर में दुर्गा की मूर्ति थी, शिल्प की कला ने उसे वह रूपरेखा नहीं दे पाई थी, जो इस बालिका में सहज ही भासित होती है।" 23

उसके सौंदर्य के ख्याति सुनकर राजा नायकसिंह भी उसे देखना चाहते हैं। जब कुंजर ने उसे पहली बार देखा तो कुंजर स्वयं इस सौंदर्यशील नारी के विषय में कहने लगा कि

"कुंजरसिंह ने रूप लावण्य और पवित्रता के उस अवतार को देखा। एक बार देखकर फिर और नहीं उठाई गई।" 24

कुमुद के चरित्र की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता है - दूसरों के प्रति उसके सहानुभूति है। वह अपने जिन्दगी के साथ आयी हुई गोमती को अपनी बहन बनाकर अपने साथ रखती है।

कुमुद के चरित्र में मंदिर लेखामात्र भी नहीं है। वह जानती है कि जगत की दृष्टि में वह दुर्गा का अवतार है। फिर भी वह दूसरों के साथ आत्मसज्जा भिन्नतापूर्ण व्यवहार करने लगती है। वह स्वयं गोमती से कहती हैं -

"तुम बालकिन दुर्गा को मुझे काफ़ी दुर्गा कहती हो? मैं तो केवल होम आदि कस्तवाली हूँ और यदि तुम मुझे ऐसी ही मानती हो, तो मुझे बहिनी कहलावाने में ही आनंद है।" 25

कुमुद के चरित्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता है, वह स्वयं को एक साधारण नारी समझती है। वह जानती है कि लोग उसे दुर्गा का अवतार मानते हैं। फिर भी वह
गोमती तथा कुंजर को कई बार कहनी है कि मैं तो एक साधारण नारी हूं, वास्तविक देवी तो मंदिर में है। एक स्थान पर वह कुंजर से कहती हैं —

“आप ऐसा फिर कभी न करना। मैं कोई अवतार नहीं हूं। साधारण खैर हूं। हाँ, दूरंगा माला की सच्चे जी से पूजा किया करती हूं। आप मुझे अवतार न समझो।”¹⁸

कुन्दुर एक प्रेमिका के रूप में भी हमारे सामने आती है। कुंजर के प्रति उसके हृदय में अच्छा प्रेम भावना हैं। प्रेम का खुला आचरण उसको व्यक्त नहीं करने देता। जबकि वह पहली बार कुंजरसिंह को देखती है तब से उसके प्रति उसके मन में अनुशासन की तहर उठती है। तब कुंजर विराट के मंदिर में उससे मिलता है। तब वह उसे शरण देती है। साथ ही एकांत में वह उससे बोलती है। अतः एक बार रामबाण गोमती से कहता भी है —

“कुन्दुर और कुंजर में प्रेम है। प्रेम का जो आवश्यक परिणाम है, वह भी होकर रहेगा, यानी वे दोनों अपना कुंदुर बनायेंगे।”¹⁹

अंत में गृहु की गोद में जाने समय कुंजरसिंह के गले में फूल की माला डालकर अपना प्रेम अंकित करती है। जैसे —

“और उसने अपने ओंचल के छोर से जंगली फूलों की गृंधी हुई एक माला निकाली और कुंजर के गले में डाल दी।”²⁰

कुंदुर एक सहायतारी के रूप में भी हमारे सामने आती है। वह दूसरों को कुंदुर में दू-खिं और सुख में सुखी होनेवाली नारी है। इसके साथ-साथ वह दूसरों को समय - समय पर प्रेमण भी देती रहती है। वह गोमती की दयावन से सुनकर बहुत दुखी होती है। जब कुंजरसिंह कुंदुर को कहता है कि मैं देवी सिंह का विरोध छोड़ दूंगा। तब वह कुंजर सिंह को अपना विचार न चलने की प्रेमण देती हुई कहती है —
“इस तरह का प्रण मत करिए। आप देवीतिह का सामना अवश्य करें।
अपने हक के लिए लड़ें, परंतु कालपी के नवाब से जब वह निवड़ लें।”

कुमुद एक चारित्र प्रधान नारी के रूप में भी दिखाई देती है। उपन्यास के अंत में कुंजर सिंह और देवी सिंह के बीच युद्ध होता है। उसमें कुंजर मारा जाता है। यह समाचार सुनकर कुमुद भी मर जाना चाहती है क्योंकि वह अपना चारित्र अलीमदान के हाथों में नहीं दे सकती थी। वह वैंतवा की धार की ओर जाती है। उसका पीछा करता हुआ अलीमदान वहाँ पहुँच जाता है। कुमुद बौद्ध धार जोड़कर वैंतवा की धार के सामने धीमे स्वर में गाती है—

“मलिनिया, फुलवा ल्याऊं नेंदन वन के। बीन-बीन फुलवा लगाई बड़ी राह;
उड़ गए फुलवा, रह गई धार।”

जैसे ही उसका गाना समाप्त हुआ उसने वैंतवा की धार में कुमुद अपने जीवन का अंत कर दिया। इस प्रकार वह अंत में अपना चारित्र बचाकर जीवन का स्वरं अंत कर देती है।

अंततः: कुमुद का चारित्र प्रस्तुत उपन्यास का सर्वप्रमुख खूनी पात्र है। उपन्यास की नायिका के रूप में भी वह सबसे उन्नत है। अपने विशिष्ट गुणों के कारण वह पाठक पर अपना प्रभाव डालने में भी सफल होती है।

(२) गोमती का चरित्र-विचरण:

गोमती उपन्यास की नायिका की सख्ती के रूप में आती है। वह गौण-पात्र के अंतर्गत मूर्ख है। गोमती की माता-पिता की मृत्यु जब वह छोटी थी उस समय हो जाती है। अतः वह अपने परिवार में अकेली है। उपन्यास में वह एक सामान्य नारी के रूप में उभरकर हमारे सामने आती है।

गोमती का चारित्र इस उपन्यास में एक समझदारी नारी के रूप में हमारे सामने आता है। किन्तु वह भोली है। उसका स्वभाव भी सम्भल और सहज है। गोमती और
कुमुद एक दूसरे से घुप-मिल गए हैं। रामद्वार सोमती को रहने की ख्याति करता है। अलीमरान और देवीसिंह के बीच युद्ध होमेचारा है। वह उसको लेने के लिए कुंजरसिंह और कुमुद के पास जाता है। और कहता है—

“मैं सोमती के ठहरने का उचित प्रबंध कर आया हूँ।”

सोमती रामद्वार की बातों में आ जाती है। वह लघुगुच्छ मोली लड़की है।

जिसका परिणाम उसे भूलता पड़ता है। जैसे—

“सोमती को रामद्वार सहारा देता हुआ, एक तरह से पशीटता हुआ अलीमरान की छावनी की ओर ले चला।”

इस प्रकार सोमती और रामद्वार चोटों वहाँ से निकल पड़ते हैं। रात में सोमती रामद्वार से प्रणय की भी बात नहीं करता है। वह उसे अलीमरान की छावनी में ले चलता है। उसे अपने साथ रखता है।

सोमती का पांव उपयोग में एक कर्तव्य-पालन और निर्धारण नारी के रूप में भी उम्मकर आते हैं। किन्तु वह रामद्वार की बातों में आ जाती है। वह इन बातों से बचना चाहती है। जबकि रामद्वार अपनी वासना पूरी करने के लिए उसके सामने झुला प्यार का नाटक करता है। रात में सोमती से पृथक्त है कि तुझे रामद्वार से विवाह करेगी। तब वह रात में कहती है—

“मैं रामद्वार के साथ विवाह न करेगी, विवाह रहेगा।”

सोमती एक आदरंग भारतीय नारी का भी प्रतिनिधित्व करती है। उसका बाबत पति देवी सिंह चलीपनगर में जाकर वह भूल जाता है कि कभी किसी दासकुंड की कन्या ने उसके नाम की मेधाइ रचाई थी। सगर सजाया था। किन्तु फिर भी सोमती देवी सिंह को अपने पति माने हुए यह सोचती रहती है कि उसका पति अवश्य आयेगा और उसे ले जायेगा। वह अपने पति के लिए कुमुद दुर्गा स्वरूप को प्रार्थना भी करती है कि—
“यह भीमा मांगती हूँ कि कुंजरसिंह का नाश हो, अलीमर्दन मर्यमत हो और
बलीपुरगर के महाराज की जय हो।”

इस प्रकार यह भारतीय नारी के आदर की तरह एक बार जिसे अपना पति मान
लिया सदैव के लिए उसी की हो जाती है उसका उदाहरण प्रस्तुत करती है।

उसके चरित की एक महत्वपूर्ण विशेषता है उसकी निर्भार प्रेम-भावना। जब
युद्ध में उसको पता चल जाता है कि अलीमर्दन और वेदीसिंह की लड़ाई में कुंजरसिंह
की मृत्यु हुई है और कुंजर की मृत्यु के पीछे कुमुद भी बेतवा की धार में ख्यात तो
अपना प्रणाम दे देती है। तब वह समाचार गोमती सुनती है और वह वेदीसिंह हो जाती है।
उसी समय अचेत गोमती को वेदी सिंह के सामने लाई जाती है। जहाँ उसके प्रण-पंखों
श्रद्धा के लिए उड़ जाते हैं।

इस प्रकार विशारद की पद्ममीरी उपन्यास में कुमुद की सखी गोमती का चरित
एक भोली भाली और निर्भार नारी का चरित है। जो अपना कर्तव्य निभाते —
निभाते मर जाते हैं।

(३) छोटी रानी का चरित –प्रश्न

प्रस्तुत उपन्यास में छोटी रानी का चरित उतना महत्व नहीं रखता। फिर भी
उसके चरित की जो कुछ विशेषताएँ उसको देखने का प्रयास करें।

बलीपुरगर के राजा नायकसिंह की दो रानियों थी। बड़ी रानी और छोटी रानी।
छोटी रानी का चरित वैसे समग्र उपन्यास में एक इर्दगिर्द नारी के रूप में हमारे सामने
आता है। जब राजा नायकसिंह अपनी स्था करने-तलाने-देवीसिंह को राजमहल में खाने
लगता है। तब बड़ी रानी तो उस पर आनंद व्यक्त करती है। किन्तु छोटी रानी उससे
नफरत करने होती है। उपन्यासकार के शब्दों में —

“राजा का स्नेहभावन होने के कारण बड़ी रानी भी देवीसिंह पर कृपा करने
लगी और छोटी रानी अकारण ही धूणा।”
राजा की मृत्यु के पश्चात जब देवीसिंह को राजा बनाया जाता है । तब छोटी रानी को बड़ा पुर्या होता है । उनसे लड़ने के लिए छोटी रानी अलीमदान को रामदास के द्वारा राजी भेजती है । अलीमदान राजी का स्वीकार कर उसे अपनी धर्म की बहिन बना लेता है । अलीमदान के पत्र में होकर यह देवीसिंह के विरुद्ध लड़ती भी है ।

यह अंत तक देवीसिंह, लोचनसिंह, कठोर सिंह आदि के विरुद्ध लड़ती रही और अंत में लाचनसिंह के साथ लड़ती हुई वह मारी जाती है । जैसे —

“अाँधी की तरह तलवार घुमाकर लोचनसिंह ने छोटी रानी की भूलक-यात्रा समाप्त कर दी।”

अन्य नारी-पात्रों में बड़े रानी का नाम आता है किन्तु वह उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है ।

कचनार उपन्यास में नारी-पात्रों की विशिष्टता:

प्रस्तुत कचनार उपन्यास में कचनार और कलाकृति मुख्य नारी-पात्र है । ललिता और मत्सया गोपण रजी पात्र है । सभी नारी-पात्र अपनी-अपनी विशिष्टता लिए हुए हैं । जो इस प्रकार है —

(१) कचनारः

कचनार उपन्यास में नाथिका के रूप में हमारे सामने आती है । जो उपन्यास का सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रमुख रजी पात्र है । वह आकर्षित एवं पाठकों की सहानुभूति पाने में सफल रहती है । डॉ. शशिशुभोषण सिंघल कचनार की चारित्रिक विशेषताओं में बताते हुए कहते हैं —

“कचनार में सीद्धरं, कोमलता, तीखापन है । नारीलिं के शोषणों के प्रति उसमें निष्ठा है, पुरुषों का सा शाहस और कोमलता से भिन्नतित स्वदेशवर्त्त नारी है । लेखक की नारी संबंधी धारणा कचनार में आकर विकसित और पुनः हुई है।”
कचनार सौन्दर्यमय नाही है। जबकि वह उपन्यास के आरंभ में एक दासी के रूप में हमारे सामने आती है। कचनार के माता-पिता लड़ाई में मारे जाते हैं। उनके पश्चात कचनार का भरण-पोषण कलावती के पर पर ही होता है। जिसे कलावती के माता-पिता ने दासी के रूप में कलावती के दान में दिया था। वह उतनी रुपरेखा है कि वल्लिपिसिंह जब उसे पहली बार देखते हैं, उसी वकट उसके प्रति आकर्षित हो जाते हैं। मानसिंह उसके सामने कलावती और कचनार की तुलना इस प्रकार करता है।

“दुलेयाजु का स्वर सारसी-सा मीठा है, कचनार का कठ मीठा होते हुए भी चुनीती सा देता है। दुलेयाजु कमल है, कचनार केंद्रिला गुलाब.... दुलेयाजु वर्षीकरण मंत्र है और कचनार दोनों उत्तरनेवाला मंत्र।...।”

सचमुच कचनार रूपरेखा नाही है। उसकी प्रशंसा अरु भी करता है। इतना ही नहीं कलावती रूप होने पर भी, उसके सौन्दर्य की प्रसंगा करती है।

कचनार आदर्श प्रेमिका के रूप में हमारे सामने आती है। वह वल्लिपिसिंह को प्रेम करती है लेकिन अपना नारीलय नष्ट करके प्रेम करना उसे हितार्थ नहीं लगता। जब वल्लिपिसिंह धार्मान होता है, तो विन-रात वह उसकी सेवा करती है। जब वल्लिपिसिंह बालकों जैसा व्यवहार करता था, तो कलावती खेलती उठती है। वल्लिपिसिंह की कविता मृत्यु के पश्चात धामोकी उसे कारगार सा लगता है। वल्लिपिसिंह के प्रति उसका प्रेम अनन्य था, तभी तो मानसिंह या महान्य उसे तुका नहीं सकता। वल्लिपिसिंह के चले जाने पर उसका बेह रोऽ मुख जाता है। उसमें वैसा का भाग उदय हो जाता है, जब कलावती उसे विवाह के बारे में पुछती है तब—

“कचनार की ऑन्नो में बच्चा एक ऑंसू आ गया। कठोरता के साथ उसको पोछकर बोली, मेरा विवाह कृष्ण के साथ हो गया। अब किसके साथ कहेंगी?”
कचनार के उपर फुक कथन में दलीपसिंह से विवाह न होने की हताशा के साथ उसकी प्रणव भावना से उत्पन्न कृष्णानुराग प्रकट होता है। वह गुसाई सुमनसपुरी के प्रति कोमल भाव स्थायी है क्योंकि सुमनसपुरी दलीपसिंह का हमशक्ल है। उपन्यास के अन्त में वह अपना खोया हुआ प्रेम प्राप्त कर आनंद से जीवन-पापन करने लगती है।

कचनार में चार्चित्रिक दुःख है। वह अपने निर्णय पर अड़िया रहने की श्रमता स्थायी है। वह दलीपसिंह से प्रेम करती है किन्तु दलीपसिंह को मरा हुआ समझने के बाद वह सांसारिक सुखों को त्यागकर अपने अंतिम निर्णय पर पहुँचती हुई कलावती को कहती भी है कि अब वह विवाह न करेगी। जब मानसिंह उससे व्याह करने का उद्देश्य है तब वह अवसर लेखक के हाथ करता है तब वह व्याह करने का अवसर देता है। इस प्रकार उसके चारित्र में एक प्रकार की दुःख है।

कचनार स्वामिनारायण के रूप में हमारे सामने आती है। जब केवल दलीपसिंह उसे अपनी बनाने के लिए धन एवं साथी पद का लाभकार बनाता है तब वह कहती है--

"मुझको पस्तालकार कुछ नहीं चाहिए। मैं गोरे कन्या हूं, बृहस्पति की छाल से अपना शरीर दौक सकती हूं।"

कचनार स्वामिनारायण होने के साथ-साथ तेजस्वी और चतुर भी है। वह पढ़ी लिखी भी है। उसके चार्चित्र को देखकर ही दलीपसिंह कहता है--

"मैं कामकाज में तुम्हारी सहायता समझती लिखा कहेंगा। तुम बहुत चतुर हो।"

अपनी तेजस्विता के कारण कोई महत्व द्वारा दिए गये उपदेशों को तुरल ग्रहण कर लेती थी। अपनी चतुरसूत्र के कारण वह मानसिंह की जाल से बचकर भागने में सफल होती है। जब भागकर गुसाईयों के आश्रम में जाती है। तब अपने को वीन निषिद्ध थी अनिवार्य सर्प संगम है और शरण न मिलने पर आमंत्रण करने की धमकी भी बताती है। यहाँ पर भी उसकी चार्चित्र शक्ति प्रकट होती है।
कचनार में हान प्राप्त करने की जिजासा अधिक है। इसीलिए तो यह अनेक विषयों के संबंध में महत्ता से प्रश्न करती है और उनके समझाने का अनुरोध भी करती है। यह महत्ता से प्रश्न करती है –

“महाराज, धर्म का रूप बढ़ा जिल्ल है। क्या सरल नहीं किया जा सकता है?”

कचनार में त्याग एवं संयम है। कचनार महत्ता की जगत में भी बड़े संयम से अपना निर्वाह करती है। कचनार में अपनी भावनाओं को दमन करने की शक्ति है।

कचनार के चरित्र की एक अन्य महत्त्वपूर्ण विशेषता है उसकी गुरु के प्रति श्रद्धा। एक बार जब उसके सीवर्य से विचलित महत्ता अपनी कामवासना प्रकट करते हुए कहता है –

“मैं चाहता दूः कि मेरे और तुम्हारे बीच का जो अंतर है – गुरु और शिष्य के बीच का व्यवहार – वह मिट जाए जिससे हम दोनों निस्संकोच बात कर सके।”

कचनार यह सुनकर अन्यत्न नियंत्रण के साथ अनुशीलन गुरु के इस कथन का उत्तर देता है –

“महाराज, गुरु को भगवान् की चर्चारी का पद दिया गया है, शिष्य और गुरु में अंतर तो खोज गया ही, पूजा और पुजारी का अंतर।”

निश्चयतः हम कह सकते हैं कि कचनार सभी प्रकार की कसरतियों में से पार उसकी है। सिखारामशरण प्रसाद लिखते हैं –

“निश्चय ही कचनार अपने चरित्र और स्वभाव में तेजमय परम्परा साधारण कोटि से लेकर कोटि की नारी है, जो बहुत चित्तन -मनन के उपयोग कदम उठाती है।”
संक्षेप में कचनार अपने विशिष्ट व्यक्तिवृत्ति के कारण पात्र पर अपना निर्देश दालने में सफल रहती है। वर्मा जी ने बहुत ही समझदारी पूर्वक उसके चरित्र का निर्देश किया है।

(2) कलावती:

कलावती कचनार उपन्यास का महत्वपूर्ण पात्र है। जो आदि से लेकर अंत तक एक जैसी ही बनी रहती है। कलावती खटलिया गोंद की पुत्री थी। उसके पिताजी गोपाल थे। इसी कारण उसका भोवर धामोली की राजा कलिप्रसिंह की कटार के साथ पड़ता है। इस कटार को लेकर कलिप्रसिंह के बुरे का एक भाई मानसिंह गया था। कलावती सौंदर्यमय नारी है। जिसका वर्णन करते हुए उपन्यासकार लिखते हैं—

"रंग गेहूँ से जस ज्यादा गौर, आँखे बड़ी, बोलनवाली लंबी, नाक सीधी, चेहरा गोल।" "

उसके हि सौंदर्य से प्रभावित होकर ही मानसिंह उससे प्रेम करने लगता है। कलावती के चरित्र की विशेषताओं पर नजर दालने से तुरंत ही पता चलता है कि वह स्त्री सहज़ चारुता एवं उदयपुरी स्वन्दरताली स्त्री है। अपने नाम की नारी मद्रा को अन्याय होता देखकर वह उसे न्याय चिलाने के लिए राजा के पास भी जाती है। उसका चारुता उस समय प्रकट होता है जब वह कचनार का पुरुषों के स्वभाव के बारे में कथन करती है।

"तुम अभी पुरुषों का स्वभाव नहीं समझती। खूब सजकर चलने तो अपनी बात का प्रभाव बहुत अच्छा पड़ेगा।" "

एक आत्मीय सख्त के रूप में भी वह हमारे सामने प्रकट होती है। उसके साथ दासी के रूप में आई हुई कचनार और ललिता से वह सख्ती से भी बड़हुंकर व्यवहार करती है। उसका वचन प्रभात भी इन दोनों के साथ बीता था। इसी कारण से वह इन दोनों का
प्रेम और विश्वास बनाने स्वावलंबी चाहती है। जब वह धामोनी लाई जा रही है, उस समय रास्ते में ही उसका इन दोनों के प्रति निम्न उद्देश्य उसके स्वभाव पर प्रकाश डालता है।

"तुम आया में कचनार से कुछ बड़ी हो, सो बड़ी मूलीम साहब और कचनार तुमसे कुछ छोटी है, सो छोटी मूलीम साहब।"  

कलावती मानसिंह के साथ विवाह-विवाह भी सहिया की अनुमति पाने के पश्चात ही करती है।

कलावती का चित्र मया और परंपरा में आस्था रखनेवाली नाती के रूप में भी उज्जवल होता है। तभी तो वह सुहागर वे दिन दलीपसिंह की इच्छा को पूर्ण नहीं करती और उसकी उपेशा का पात्र बन जाती है। वह अकेले मे चूपके रही और बह रही है। लेकिन मान-मया का भंग नहीं करती। कचनार का आकर्षण दलीपसिंह के प्रति देखकर भी वह उससे इच्छा नहीं करती। बल्कि जब मानसिंह कचनार को घरेलू कहता है। तब वह मानसिंह से कहती है –

"मुझको चाहती है। उसकी किसी प्रकार कष्ट नहीं होना चाहिए।"  

कलावती एक सफल प्रेमिका के रूप में भी चित्रित की गई है। जब दलीपसिंह का दूर का भाई मानसिंह उसके काथ दलीपसिंह की कटार लेकर भाँपर पड़ता है। तभी से वह उसको चाहने लगती है। धामोनी आते समय रास्ते में मानसिंह उसके पास जाता है तब उसे अच्छा भी लगता है। दलीपसिंह की मृत्यु के पश्चात वह मानसिंह से विवाह भी कर लेती है।

कहती – कहती कलावती के चित्र में कुछ कष्ट भी नजर आती है। वह दलीपसिंह से विवाह करती है। फिर भी वह मानसिंह से स्वार करती है। उसकी इस दीन भावना का परिचय मानसिंह जिसे आते वक कहते में ही मिल जाता है। दलीपसिंह की कठिन मृत्यु से विवाह करती है। डॉ. रामदर्शन मिश्र के अनुसार –
"यह इतनी नीच मालूम पड़ती है कि अपने साथ-साथ सती साधियों के
नारील को भी मानसिंह की क्षीड़ा मृति को अर्पित कर देना चाहती है।""13

अंतः कुछ दुरुपयोगों को छोड़कर यह उपन्यास में अपना स्वतंत्र अविलम्ब रखती है।
धर्मजी ने उसके चरित्र में अनेक महत्वपूर्ण विशेषताओं को अर्पित कर उसका महत्व
बढ़ा दिया है।

(2) ललिता:
कचनार उपन्यास के गीण नारी-पत्रों में ललिता भी अपना निजी महत्व रखती है।
वैसे उपन्यास में उसका चरित्र इतना विस्तार से अर्पित नहीं किया गया है। कलावधि
के साथ दासी के रूप में बहेज में विशेष रूप से आप्रवासी ललिता खटोलिया गोड़ की पुजी है।
कचनार की अपेक्षा ललिता इतनी सुन्दर नहीं है। उपन्यासकार ने उसके रूपाकार
का वर्णन करते हुए लिखा है -

"शूरुआत जरा खांबे रंग की, ओरेशे बड़ी, परंतु नाक कुछ चपड़ी, नयने फूले
हुए।""14

सीढ़ी, सस्त्र एवं संतुष्ट नारी के रूप में उसका चरित्र हमारे सामने उजागर होता
है। वह दासी प्रथा से संतुष्ट रहती है। वह गाँवी होने के साथ-साथ सीढ़ी एवं सस्त्र
नारी है। वह दासी प्रथा से संतुष्ट रहती है। वह गाँवी होने के साथ-साथ सीढ़ी एवं सस्त्र
नारी है। वह दासी प्रथा से संतुष्ट रहती है। वह गाँवी होने के साथ-साथ सीढ़ी एवं सस्त्र
नारी है। वह दासी प्रथा से संतुष्ट रहती है। वह गाँवी होने के साथ-साथ सीढ़ी एवं सस्त्र
नारी है। वह दासी प्रथा से संतुष्ट रहती है। वह गाँवी होने के साथ-साथ सीढ़ी एवं सस्त्र
नारी है। वह दासी प्रथा से संतुष्ट रहती है। वह गाँवी होने के साथ-साथ सीढ़ी एवं सस्त्र
नारी है। वह दासी प्रथा से संतुष्ट रहती है। वह गाँवी होने के साथ-साथ सीढ़ी एवं सस्त्र
नारी है। वह दासी प्रथा से संतुष्ट रहती है। वह गाँवी होने के साथ-साथ सीढ़ी एवं सस्त्र
नारी है। वह दासी प्रथा से संतुष्ट रहती है। वह गाँवी होने के साथ-साथ सीढ़ी एवं सस्त्र
नारी है। वह दासी प्रथा से संतुष्ट रहती है। वह गाँवी होने के साथ-साथ सीढ़ी एवं सस्त्र

ललिता एक समझौता नारी के रूप में भी हमारे सामने प्रकट होती है। जब
वल्लीपालिंस का अनुशासन से परिपूर्ण रहता है और वल्लीपालिंस का कथित मृत्यु के पश्चात

171
वनसिंह राजा हो जाता है तब वह उसी की दासी बनकर रहती है। इस प्रकार यहाँ उसकी व्यवहार कृशता भी नजर आती है।

अंत में हम कह सकते हैं कि ललिता का पात्र कथानक के विकास में अपना योग देता है। वर्माजी ने उसके चरित्र में उत्तरा महत्व देना अथवा समझाना नहीं है। उन्होंने सिर्फ उसका उपयोग एक सहायक पात्र के रूप में ही किया है।

(४) मन्त्रा:
कथानार उपन्यास के नारी-पात्रों में मन्त्रा भी अपना ध्यानाकर्षित करती है। उसका नाम गोप नारी-पात्र की श्रेणी में रखा जा सकता है। उसकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं। निम्नलिखित के रूप में हैं:

मन्त्रा डू की पत्ती है। विवाहशीर्षसंत उसका नाम रायरानी रखा जाता है। किन्तु फिर भी डू उसे मन्त्रा कहकर ही बुलता था। मन्त्रा रुप-सार्वभौम मारी थी। उसके रूप का निकार उसकी हैसने में था। उसकी व्यवहार कृशता सराहनीय है। वह अपना काम कलावती और वनसिंह को प्रसन्न करके निकटवर्ती लेती है। मन्त्रा एक प्रतिप्रतियांण नारी है। वह अपने पति डू और रायराने से बहुत यथार्थ करती है, अपने प्राण से भी ज्यादा वह अपने पति को चाहती है। डू जब भाग जाता है तब उसके होटों पर सवा रहनेरानी मुख्याहत गायब हो जाती है। अपने पति के विश्व में वह दुर्भाग्य और मलामत हो जाती है। अपने पति को ही वह सभी कृपढ़ मानती है। उसके विश्व में वह अपने को कृपढ़ भी नहीं समझती। जैसे—

"तुम घर पर आ जाओ सो मैं रानी ही हूँ। किसी भी रानी - महारानी से अपने को कम नहीं समझूँगी।"
अंत में हम कह सकते हैं कि उपन्यास में मन्त्र का पतितस्वरूप रूप ही पाटक पर अपना प्रमाण छोड़ जाने में सफल होता है। वर्माजी ने उसका चरित्रांकन सफलता के साथ किया है।

निक्षर्त यह हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत उपन्यास नाथिका प्रथान उपन्यासों में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। नारी पत्रों की सूचित कथानार की विशेष उपलब्धि है।

झौंसी की रानी उपन्यास में नारी-पत्रों की विशेषता

रानी लक्ष्मीबाई के अति-रनी-पत्रों में सुन्दर, सुन्दर, काशी, जूही, झालकारी, कोरिंग मोतीबाई आदि उल्लेखनीय है।

(१) रानी लक्ष्मीबाई:

झौंसी की रानी उपन्यास एक नाथिका प्रथान उपन्यास है। रानी लक्ष्मीबाई उपन्यास के नारी-पत्रों में प्रथान है। उनके चरित्र से लेकर गुप्त तक की सभी घटनाओं को उपन्यास में वितित किया गया है। संपूर्ण कथानक रानी लक्ष्मीबाई को केंद्र में खाकर ही लिखा गया है। अतः हम कह सकते हैं कि रानी लक्ष्मीबाई ही उपन्यास की नाथिका है। उनके चरित्र की जो प्रमुख विशेषताएँ है, वह इस प्रकार है—

रानी लक्ष्मीबाई का चरित्र का नाम गुप्त है। वह प्रथम तो एक बालिका के रूप में हमारे सामने आती है। चरित्र में बालिका गुप्त का व्यक्तित्व सुन्दर, कुसांबुढ़ि, साहबी एवं देश के प्रति निष्ठा की भावना आदि की शाखा का वर्ण देखने को मिलता है। उसके संदर्भ का वर्णन करते हुए वर्माजी लिखते हैं—

"झौंसी ने मनुष्यों के विशाल नेत्र, भीरे को लज्जातवाले चमकीले बाल, खूबसूरत चेहरे का अतीत सुन्दर बनाय देखकर प्रसन्नता प्रकट की।" चरित्र से रानी लक्ष्मीबाई में अत्यन्त संचालन की अधिक रुचि थी। वह मलामाल, कुशी, तलावार और बैंडुक चलाना, अश्वारोहण, पट्टन-पटान इत्यादि बड़ी कुशलता के
साथ सिखती है। झौंसी से आए हुए तत्त्व बुद्धित ने जब मुझबाई के शास्त्र पढने की प्रसंख्या की, तब वह स्वयं कहती है—

“मैंने शास्त्र ओळखो से देखा भर सिखा है। मुझको तुलसीदास की रचायन
बड़ी प्रिय लगती है परंतु तलवार चलाना, मलबंग भोजना, घोड़े की सवारी ये उससे
भी बड़ा कर भाले हैं।” ॥

बचपन से रानी लक्ष्मीबाई में पौराणिक गाथाओं और इतिहास का पूर्ण ज्ञान
था। वह हमेशा ऐतिहासिक पात्रों की आयन साथ तुलना करती रहती थी। वह वाचार
बटल थी। अतः उनके सियाजी मोरपंत उनके वाचार कहते हैं। तब वह अपनी कुशाग्र
वृद्धि से पौराणिक गाथाओं और इतिहास का उपहारण देती हुई कहती है—

“आप ही कहा करते हैं, ताराबाई ऐसी थी, जीजाबाई ऐसी थी, अहिल्याबाई
ऐसी, मीरा ऐसी, मैं पूछती हूं, क्या वे सब मूंझ पर मुहर लगाए रहती थीं?” ॥

रानी लक्ष्मीबाई का चरित्र आयतर पत्ती के रूप में भी हमारे सामने प्रकट होता
है। उनकी उम्र तक चौथाई वर्ष की थी। तब उनका विवाह चालीस वर्ष के झौंसी के राजा
गंगाधरसाह से हुआ था। उन्होंने इतना बड़ा फासला भी उसके ह्वयार में तनिक सब भी
क्षोभ या विग्रह की भावना उत्पन्न नहीं करता। उनकी तुलित में शारीर वह विवाह स्वयं
की महत्वकांक्रामों की पूर्ण एक विन अवस्थाको रूप। विवाह के परिवार वह अपने पति
गंगाधरसाह का पूर्ण साथ बताती है। उनके हरेक कार्य में वह अपना हाथ बढ़ाने के लिए
प्रयत्नशील रहती है। एक बार जब राजा गाइंच पर अपना पुरस्कार प्रकट करते हैं। तब
उसके परवाह वह समाचार रानी हकीमबाई को मिलता है। वह अपनी सहेलियों को
कहती है—

“आज में जितनी खुश हूं, उतनी कुछ बहुत ही पहले कभी हुई हों। मुझको
शिवराज भाऊं की बढ़ौ होने का बहुत प्रमंड है। मुझको अपना राजा का, अपनी झौंसी
का अभिमान है।” ॥
रानी लड़कीवाई उम्मीद की जनता के प्रति अन्यायिक प्रेम करती थी। वह जनता की शक्ति की ओर से उदासीन नहीं रहती वरन् जनता की शक्ति पर अटूट आस्था रखती है। जनता हमारे साथ है। जनता सब छुप्प है। इतना ही नहीं वह यह भी जानती थी कि एक दिन ऐसा अवस्था आयेगा जब इसी जनता के आगे होकर वह स्वसत्व की पता फहरायेंगी। जब रानी अंग्रेजों से चुरूल लेती है, तब सारी जनता उनका साथ देती है।

रानी लड़कीवाई के चरित्र की सबसे बड़ी गरिमा यह है कि वह अपनी दासियों को दासी नहीं रूप में मानती है। इसका मुख्य कारण यह था कि वह जानती थी इस पवित्र अनुष्ठान में उनकी आवश्यकता रहेगी। इसीलिए तो वह उनको छुइसबारी, मलखंड, कृष्ण, हथियार चलाना आदि पूर्ण निष्ठा के साथ सिखाती है। वह उनको अपना वृष्टिकौण स्पष्ट करते हुए कहती थीं—

"पुरुषों को पूर्वार्थ सिख़ाने के लिए खियाओं को मलखंड, कृष्ण इत्यादि सीखना ही चाहिए। छुइस तेज दोईँ भी। नाचने—गाने से भी खियाओं का स्वस्थ्य सुधारता है, परंतु अपने को मोहक बना लेना ही को खी का समस्त कर्तव्य नहीं है।"¹³³

रानी लड़कीवाई अक्षङ्ग और उद्वत स्वभाव की है। अपने वियाह के अवसर पर जब पुरुषों का हाथ कोपिने लगता है। तो वह थिया किसी शरम संकोच से दूःख स्वर में कहती है—

"ऐसी बोधित कि कभी छूटने नहीं।"¹³³

रानी लड़कीवाई के समय यथावत से प्रभावित होकर डॉ. उपा भटनागर लिखती है—
"इस वीरंगना नारी ने अपनी छोटी सी वय में जिस शीर्ष, लगन, दूरवंशिता, वृद्धमानी और सत्यविद्या आदि अवयव गुणों का प्रदर्शन किया है वह भास्त ही नहीं, विश्व के इलिहास में अद्वितीय है।"\(^{35}\)

समतामयी माता के रूप में भी रानी लक्ष्मीबाई का चरित्र हमारे सामने उजागर होता है। रानी लक्ष्मीबाई और गंगाप्रसाद से एक लड़का उत्पन्न होता है। किंतु अल्पायु में ही उसका विहंग हो जाने की वजह से वह दोनों बहुत दुःखी हो जाते हैं। जब गंगाप्रसाद उनके बुरे से एक सिंवेलार के लड़के दामोदरसाव को गोद लेने की बात रानी को कहते हैं, तब वह गंगाप्रसाद के साथ उस दास तक को स्थिर रखते हैं। दामोदरसाव को गोद लेने के पश्चात रानी उसका पतला-पोषण बहुत ही उत्साह के साथ करती है। रानी लक्ष्मीबाई के मातृ रूप से प्रस्त्र होकर उपनायकार लिखते हैं -

"दामोदर राणी के प्रगाढ स्नेह में पल घा था, बढ़ घा था। कोई निज माता अपने गर्भ - प्रसून को इंतना प्यार न करती होंगी जितनी वह दामोदरसाव को चाहती थी।"\(^{36}\)

एक वीर नारी के रूप में रानी लक्ष्मीबाई का चरित्र हमारा ध्यान सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। बचपन से लेकर मृत्यु तक के सभी चरण में किसी न किसी रूप में उसके चरित्र ने दृष्टा देखने को मिलती है। जब अंग्रेज इंग्लिश को अपने अधीन कर लेते हैं तब वह प्रतिज्ञा करती हुई कहती है -

"मे बंकेश मुंडन तभी करेंगी, जब हिंदुस्थान को स्वातंत्र्य मिल जाएगा, नहीं तो शम्सान में अभिवेदन मुंडन करेंगे।"\(^{37}\)

रानी लक्ष्मीबाई के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर डॉ. सिवारामशरण प्रसाद लिखते हैं -

"लक्ष्मीबाई का निर्माण विज्ञाता ने अद्वितीय रूप के साथ बुद्धि, कौशल तथा वीरत्व के सफल संयोग से किया जिसमें शीर्ष और सीधर का सफल सन्तुलन भी
है। जिसके एक-एक शब्द से अंगार और तेज झस्ते हैं, आकृति और रूप शोभा पूलोको लगभग करती और बुद्धि और ज्ञान के संधान से जीवन के प्रकाश की दीपिका फूटती है।

अंततः हम कह सकते हैं कि बचपन से लेकर मृत्यु तक के जितने भी आधार में से रानी लक्ष्मीबाई प्रसार हुई हैं, वहाँ वह अपनी अलग प्रतिभा की छाप छोड़ आई है। वर्माजी ने उसके चरित्र को मानवीय स्तर से ऊपर उठने नहीं दिया है। वर्माजी को उसके चरित्रांकण में पूर्ण रूप से सफलता मिली है।

(2) सुन्दर:

सुन्दर ज्ञानी की रानी' उपन्यास के नारी-पात्रों में सहायक पात्र के रूप में हमारे साधने आती है। उसके चरित्र का विस्तार के साथ वर्णन नहीं किया गया है किन्तु जो कुछ वर्णन किया गया है। उनके आधार पर हम उसके चरित्र की मुख्य विशेषताओं पर वृद्धिपत्र करेंगे।

मनु जब विवाह करके रानी लक्ष्मीबाई बनकर झाँसी में जाती है। तब वही सुन्दर उनकी बाती के रूप में नियुक्त की जाती है। वह गोप बात है कि रानी लक्ष्मीबाई ने उसे सहेली के रूप में ही गाना। उनके रूप - जीवन का वर्णन करते हुए वर्माजी लिखते हैं-

"अर्थिर छहशार रंग, हलका - संवृत, चेहरा जरा लंबा, आँखें बड़ी, नाक सीधी, ललाट प्रशस्त और उजला।"

सुन्दर का चरित्र एक कर्मचारिणी नारी के रूप में हमारे साधने आता है। वह रानी लक्ष्मीबाई के हरेक सुखद को बड़ी तनवता के साथ स्वीकार करती है। रानी लक्ष्मीबाई के साथ सुन्दर अंग्रेजों के विष्कट लड़ते-लड़ते अपने प्राणों का बलिदान कर देती है।

सुन्दर एक चरित्रस्तोत्र नारी के रूप में भी हमारा ध्यान आकर्षित करती है। एक बार जब दुल्हाजु सुन्दर से प्रेम निवेदन करता है। तब वह तुरंत ही सजावट होकर उसे फटकार देती है। दुल्हाजु को चले जाने के पश्चात वह मन में बोलती है -
“बो जूते मूंह पर न लगा पाई। बड़ा सरसार फिसा है। मेरे स्कीत को इतना दुर्वल समझा।” ॥६॥

अंतः: हम कह सकते हैं कि मुंदर एक देशान्त्री नारी है। वह रानी के साथ अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ती थी। और हैंसते-हैंसते अपने प्राणों को बलिदान कर देती है। डा. यारिका प्रसाद सकसेना लिखते हैं —

“मुंदर-मुंदर आदि कर्तव्यरत्न, राष्ट्रप्रेमी नारियों थी।” ॥६॥

(२) मुंदर:
‘झाँसी की रानी’ उपन्यास के सहायक नारी-पात्रों में मुंदर का नाम भी लिया जा सकता है। वर्षों बाद मार्गजी ने उसके चरित्र का विस्तार से वर्णन किया है किन्तु जो कुछ वर्णन किया है। उसके अधार पर उसकी चरित्रिक विशेषताओं इस प्रकार है —

मुंदर एक रूप-सार्वभौमी नारी है। वह भी रानी लक्ष्मीबाई के विवाह के पश्चात झाँसी में जाने पर दारी के रूप में नियुक्त की गई थी। उसकी रूप-क्रांति का वर्णन करते हुए मार्गजी लिखते हैं —

“मुंदर और कासी दोनों गोर वर्ण की। मुंदर का चेहरा बिलकुल गोल, आँखें मुंदर से कुछ ही छोटी परंतु चंचल और तेज।” ॥६॥

एक आवर्त प्रेमिका के रूप में मुंदर का चरित्र सकल सहा है। वह रघुनाथ से प्रेम करती है। अतः एक बार वह रघुनाथसिंह से कहती भी है —

“भी पहले महंगी। आप आज मौंट बॉंड लीजिए। यदि फिर वह बात कही तो लड़के-लड़कियों कुछ नहीं खिला उठाई।” ॥६॥

मुंदर कर्तव्यनिष्ठा नारी है। वह अपने कार्य को बड़ी इमानदारी के साथ करती है। वह रानी लक्ष्मीबाई के हरेक आज्ञा का पालन करने के लिए तपस्या रहती है। वह अपना कर्तव्य निष्ठा-निष्ठा एक तिन परलोक सिध्दार्थ जाती है। अंग्रेजों से लड़ते-लड़ते वह मारी जाती है। उसका वर्णन करते हुए मार्गजी लिखते हैं —

178
“एक अंग्रेज सवार ने मुंदर पर पिस्तौल दागी। उसके भुंह से केवल वे शब्द
निकले। बाई साहब, मैं मरी। मेरी देह... भगवान।”

मुंदरबाई के चरित्र की आयतम विशेषता है वह तलवार चलाने में निरूपण। वह
रानी लड़भीबाई के साथ युद्ध क्षेत्र में जाती है। वहाँ सामरसिंह नामक डाकु जब रानी
लड़भीबाई पर तलवार से बार करता है तब मुंदर उसके बार को रोक लेती है। वर्माजी
लिखते हैं—

“आत्म-हंसा के भाव से प्रेमित होकर रानी पर बार किया। तुरंत मुंदर ने चपल
गति से अपनी तलवार उस पर ढाई।”

निष्कर्षवत हम कह सकते हैं कि वर्माजी ने मुंदर के चरित्र का बड़ी सफलता के
साथ विभाजक किया है। मुंदर का चरित्र पाठक को प्रभावित किये बिना नहीं रहता।

(५) काशी:

काशी भी झौसी की रानी उप-वास के नारी-पात्रों में गौण पात्र के अंतर्गत गिनी
जा सकती है। वह कर्त्त्वनिष्ठा एवं राजप्रेमी नारी है। रानी लड़भीबाई के विवाह के
पश्चात वह भी दासी रुप में नियुक्त की गई थी।

काशी भी रूप सौंदर्यमय नारी है। उसका रूपकार किसी को भी सहज ही
आकर्षित कर लेता है। उसके रूपक का वर्णन करते हुए वर्माजी लिखते हैं—

“काशी जगा छोटे कद की और सुगंधित शरीराली। मुंदर और काशी दोनों
गीर वर्ण की।”

काशी कर्त्त्वनिष्ठा नारी है। वह अपने कर्त्त्व को पूरी इमानदारी के साथ
निम्नात्मक है। वह बंदूक चलाने में भी निरूपण है। युद्ध क्षेत्र में वह रानी लड़भीबाई का
साथ भी बेती है। अपने कर्त्त्व पर अड़ियों रहते-रहते वह एक विन स्वर्गलोक सिधार
जाती है। नस्ते समय वह बड़ी बीतता के साथ लड़ी। जैसे—

“यह बहुत लड़ी हजूर। ओपर के शरीर में शीतल है।”
इस प्रकार काशीवाले एक साहसी नारी थी।

निष्कर्षतह मग कह सकते हैं कि ‘इर्षीसी की सानी’ उपन्यास के नारी-पात्रों का चित्रानंतर वर्मजी ने कुशलता के साथ किया है। सानी लक्ष्मीबाई, सुंदर, सुंदर, काशी के अलावा झुझी, मोंकी, झलकारी आदि ऐसी ही वीरंगना है जिन्होंने अंग्रेजों के साथ लड़कर हैंसते—हैंसते अपने प्राण गँवाये हैं। इन नारी-पात्रों में विलासिता नहीं है बल्कि ये सभी नारियों देश-कल्याण प्रेमी हैं।

मुगनधनी उपन्यास के नारी-पात्रों की विशिष्टता

मुगनधनी उपन्यास के नारी-पात्रों में मुगनधनी उपन्यास की नायिका है। वह प्रश्नान्न नारी-पात्रों के अंतर्गत गिनी जाती है। जबकि गीण नारी-पात्रों में लाखी, कला, सुमन मोहिनी, पिड़ी आदि है।

(१) मुगनधनी:

मुगनधनी उपन्यास की नायिका मुगनधनी है। उसका वर्णन का नाम निकी है।

उपन्यास के आरंभ में, वह लाखी गांव की गार्मिन निकी और बाद में म्यालियर की सानी हमारा ध्यान आरंभ से अंत तक बनाये स्थानी है। वर्मजी ने उसके चरित्र के कई पहलूओं को हमारे सामने उजागर किये हैं। मुगनधनी गुजर कन्या है। वह मातृ-पितृ विहीन है। वह अदल की बहन और लाखी की सड़के एवं नन्दन है। उसके चरित्र की जो महत्त्वपूर्ण विशिष्टता है, वह इस प्रकार है—

उपन्यास में सबसे पहले वह एक साँदर्भिक नारी के रूप में हमारे सामने प्रकट होती है। उसकी सुंदर रूपकृति है। वर्मजी ने उसके साँदर्भ का वर्णन करते हुए लिखा है—

"निकी चलित और पुष्क काया की है। निकी की बड़ी-बड़ी ओँचें भी हैं। लंबी-लंबी गरीबियों ने भोजों को पूरा लिया। ओँचे इतनी बड़ी थी कि उनको वास्तव में हिरण के छोटे की आँख भी जा सकता है।"
“अहीर की टूटकी तो नीसिंद्री ही है महाराज परंतु गूजर की टूटकी जैसी देखने में सुंदर और हुड़ शरीर की है, बैसी ही तीर चलाने में बड़ी निपुण है। सुसर, नाहर, तेंदुए को एक ही तीर में मार गिरती है।”

वह आवश्यकता पड़ने पर शब्दों का निर्माण के साथ सामना भी करती है।

गाँव के उन्मुक्त वातावरण में अब सोचत भी, साहसी निमित्री बाबा में मुगन्धननी बनकर महाराज मानसिंह के साथ विचार होने के परम्परा भाषा जीवन का आवश्यक प्रस्तुत करने-वाली प्रेरणादायिनी आदर्श परंतु बन जाती है, अपने गुणों और स्वभाव से वह पति का समस्त प्रेम और आदर सहज ही जीत लेती है। अपने प्रेम में हुवे हुए पति मानसिंह को यह कर्मयोग्य मुख करने के लिए निम्न प्रकार का संबोधन करती है-

“मैं चाहती हूँ आप का शरीर उत्साह, यश और सूरभावन दिन दूना बृँझ और चमकार से भरा हुआ बना रहे। जिस राजा में ये गुण न हो उसका राज्य आजकल दो महीने भी नहीं टिक सकता।”

मुगन्धननी को कला के प्रति आत्मविश्वास प्रेम है। कला सरस्वति मानसिंह का वर्ण करके मानने उसने कला का ही वर्ण किया था। विभिन्न प्रकार की कलाओं को उसने आलमसा किया था। कई प्रकार भी वह चित्रकला और मानना सिम्भने के लिए उत्साही है। संगीत के प्रति उसकी विशेष अभिरुचि इतनी प्रचल है कि वह बैजनाथ के समकालीन होने का संकल्प करती है। उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर डॉ. शार्किंग प्रसाद सकसेना लिखते हैं—
“यह एक प्रेमिकार्वी नाती है, उसमें कला और कर्त्तव्य का अभ्यूत संगम विधान है, उसमें स्वाभिमान, सादगी, समानता और सहदेह कुप्प-कुप्प कर भरी छुप्प है और बलिदं, उग्र एवं प्रशंस प्राप्त होते हुए भी उसमें कोमलता, सरसता, रसिकता और मधुरता का अद्वृत समावेश दृष्टिगोचर होता है।”

एक सहनशील नाती के रूप में भी मूर्णियनी का चरित्र हमारे सामने प्रस्तुत हुआ है। शायद के पश्चात सुमन मोहिनी उसका अन्तर्गत करती है और कई बार उसे मार डालने के लिए विष प्रस्तुत भी करती है। एक बार सुमन मोहिनी उस पर चारी का आरोप भी करती है। फिर भी वह उसको सहन करती रहती है। इसलिए भी नहीं सुमन मोहिनी को यह पूर्वक प्रस्तुत आदर करने लगती है।

मूर्णियनी एक आदर की युवालिक को भी अच्छी तरह से निम्नाती है। समानता और समान रूप, गुणवाली अहिंसा जाति की लाखी मूर्णियनी की अंतर्गत सख्ती है। तथ्यानुसार में वह यदायदा लाखी से अधिक जाती है। तदर्घ उसकी माता की मृत्यु के उपरान्त उसे अपनी भाभी बनने का हुआ निर्धारण कर लेती है। उसका दास्ताक पर भाव तो उस समय प्रकट होता है जब अपनी सख्ती लाखी के पैरों में चौंची के आभूषण देखकर स्वयं भी स्वरूपा भूषण त्यागकर चौंची के आभूषण पहनने के लिए वह तत्पर हो जाती है। उसके अभिव्यक्त का न सहन करनेवाली मूर्णियनी सख्ती की मृत्यु का समाचार सुनकर प्रथम तो हृदय को वज्र बनाती है तथ्यत शिक्षार्क में मानसिंह की दी छुप्प माता देखकर वह उससे उसके गुरू साहिब का स्मरण करके शोक विकल हो उठती है।

मूर्णियनी के चरित्र की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है उसमें दूसरों के प्रति समानता और सहदेह की हायवाना। वह सत्य लाखी को अपने ही समान मात जाता है। स्वालियर की रानी बन जाने के पश्चात उसमें अधिक सहहस्तता आ जाती है। पंडित
बोधन ग्रहण के द्वारा लाभी और अशल के विवाह में बाधा खायी करने पर भी उसकी हत्या का समाचार सुनने पर वह उसके प्रति हार्षिक दुःख और सहानुभूति प्रकट करती है।

बयान पर से ही मृगणयी के चरित्र में उसके स्वाभिमान का पता चल जाता है। उसके स्वाभिमान का पता तब चलता है जब वह नतिनियों के द्वारा सीतानद विचे जाने पर वह कुछ शिक्षा मारकर वें वह भी हम यहाँ से कुछ लेने कहती है।

उसके चरित्र की अन्यतम महत्वपूर्ण विशेषता है उसमें नियम, संघम और मर्यादा का आयोज। वह संघम नियम से प्रेम को स्थायी बनाना चाहती है। इसलिए वह मानसिंह से नियम संघम में रहने और रहने वें का आयोज करती है। वह विवाह के पूर्ब ही मानसिंह से कह देती है कि —

"मे ममातियर म जाकर पर्यावरण नहीं करहूँगी।"16

किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि वह स्वच्छन्दता और निर्लग्नता की प्रशांत देती है। वस्तुतः वह मर्यादा की परम आप्रवश्य है। इसीलिए तो वह गूढ़क बैजनाथ और विजय संघम के समक्ष ताप्त शृंगार करने से इंकार कर देती है।

मृगणयी की उपास्ता का परिचय हमें तब होता है, जब वह राज्य के उत्तराधिकारी समबन्धी समस्त का समाधान अपनी त्यागपूर्ण उद्योग विद्वान से करके वह मानसिंह को वन्द्व से मुक्त करती है। संघम, नियम और मर्यादा से वह दाम्पत्य प्रेम को अचल बनाना चाहती है। परिणाम त्यागत उसका दाम्पत्य प्रेम निरंतर उबरत होता है।

निकक्षेत्त मृगणयी संसद्यम और शौर्य की ही नहीं दर्शन वर्तमान और फल की भी देवी है। वर्माजी ने उसके चरित्र के निक्षार में अपनी समस्त शुद्ध प्रतिभा को दाय पर लगा दिया है। निसंबेह मृगणयी का चरित्र पाठक पर अपनी अपमिट छाप छोड़ जाती है। मृगणयी के पात्र से प्रभावित होकर डॉ. थारिका प्रसाद सक्सेना लिखते हैं —

183
“एक गरीब किसान परिवार की सस्तल, श्रमशीला एवं अत्यधिक बालिका ने
धीरे-धीरे अपने बुद्धि – कोशल एवं रूप – सीद्ध के बल पर अदभुत एवं असाधारण
व्यक्तित्व प्राप्त कर लिया था।”\(^5\)

(2) लाखी:

मृगनवनी उपन्यास के महत्वपूर्ण नारी-पात्रों में लाखी का नाम भी उल्लेखनीय है।
मृगनवनी के सदृश लाखी का चरित्र भी अपना निष्कज गहरा रखता है। लाखी
अधीर जाति की गरीब बहन है। जिसके पिताजी की मृत्यु वह कम उम्र की थी, तभी हो
जाती है। वह अपनी बूढ़ी माँ के संग राई गाँव में रहती है। होली के अवसर पर निन्द्रा
और अटल के साथ उसका परिवार भी है। बाद में वह निन्द्रा की अंतर्गत सख्ती बन
जाती है। वह भी मृगनवनी के समान अनेक कहानियों में निपूण है। उसके प्रभावित
होकर सिद्धांतमशरण प्रसादजी लिखते हैं –

“मृगनवनी में वर्णिप काव्यिका मृगनवनी को ही सरीरा कर उसी के नाम पर
उपन्यास का नामकरण हुआ है, परन्तु लाखी का चरित्राकार गठन इतना सशक्त है
कि जिससे यदाक्षर वह मृगनवनी से प्रबल दिशा पढ़ने लगती है।”\(^5\)

सीद्ध के रूप में भी लाखी का चरित्र हमारी ध्यानाधरक है।
उसके सीद्ध से प्रभावित होकर ही हायसुदही को दव्य की शोभा बदलने का अस्फल
प्रयास नहूँ दल करता है। लाखी में जिज्ञासुवृत्ति अत्याधिक है। वह किसी भी कार्य का
निश्चय पहले अपने मन में करती है। जैसे –

“पर पहुँचकर लाखी ने सोचा यदि मैं तीर चलाना सीख लूँ तो कुछ दुरा तो
कहेंगी नहीं। निन्द्रा भी तो लड़की ही है, गूजर-कन्या सीख सकती है तो अहीर
कन्या किसाने से कम है। मैं बहुत जल्दी सीखूँगी। निन्द्रा से सीखूँगी। अटक पड़ी तो
अटल से भी।”\(^6\)
एक आदर्श प्रेमिका के रूप में लाखी का चरित्र उजागर किया गया है। वह शिकार खेलते - खेलते अचानक अटल को अपना हृदय दे बैठती है। वह प्रेम के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार है। जब राई गाँव के लोग आतिशब्द भेद के कारण लाखी और अटल का प्रेम विवाह में परिणत नहीं होने देते तब वह राई गाँव को छोड़कर विवाह कर अपने प्रेम को सफल बनाती है।

लाखी एक बीर एवं साहसी नारी है। शिकार खेलने में वह बड़ी कौशल है। मोर, सुअर, अपने आदि को मार शिखाना उसके बीच हाथ का खेल है। नरसिंह राज में वह अटल के साथ तुकड़ों से दुर्ग की रक्षा करती है। उसके बुद्धि कौशल का परिचय हमें तब होता है जब वह नरसिंह राज में नर्तकों के पर्व में फूंस जाती है तब वह बड़ी चालाकी से पिलौरी के उत्तर तक समय रखती काट देती है।

कर्तव्यपायण नारी के रूप में भी लाखी का चरित्र अपना विशिष्ट प्रभाव पाठकों पर डालने में सफल रहता है। वह श्लाबिष्ठ के राजा-रानी द्वारा संपादित गई गाँव की रक्षा करते-करते अपने प्राणों को गैंगा देती है। किन्तु कर्तव्य से मृदु नहीं मोड़ती। अंततः उसके चरित्र की विवेचना करते हुए शिवकुमार विश्व लिखते हैं —

“अपने संघर्षों का, अपने संकटों का, अपना जीवन, अपने गोरख और अपने साहस का अंग्रेज़ी इतिहास लिए वह समाप्त हो जाती है पर उसकी कहानी कभी न भिड़नेवाली कहानी है।”

निष्पक्षता हम कह सकते हैं कि सुगन्धिनी के चरित्र की अपेक्षा लाखी का चरित्र यमकृष्णी ने अधिक संपर्क है, सजावट है। एक बीर भारतीय नारी के रूप में वह पाठकों पर अपना अभिमान प्रभाव डालने में सफल रहती है।
(3) कला:

कला मुगन्धनाथी उपन्यास के नारी-पात्रों में सहायक पात्र के रूप में उभरकर हमारे
सामने आती है। उसका विस्तार के साथ वर्णन उपन्यास में नहीं मिलता किन्तु जो कुछ
प्रमाण बाते उसके घटन से उद्घाटित होती हैं, वह इस प्रकार है --

एक दूसरी के रूप में उसका घटन उजागर हुआ है। इसका प्रमाण कारण उसका
प्रेम है। वह राजसिंह से प्रेम करती है। अतः: दूसरी के रूप में वह ग्वालियर में मानसिंह
के भवन में रहती है। उसके घटन की विवेचना करते हुए शिवकुमार मिश्राजी ने लिखा है --

"जैसा उसका नाम है वैसी ही कलावती भी वह है। परंतु उपन्यास कार ने
उसका घटन कलावती के रूप में नहीं प्रवृत एक दूसरी के रूप में किया है।"50

वह राजसिंह के प्रेम की ख्याति राजसिंह के लिए महत्त्व के नहीं, दुःसंगो के
नक्सलों आदि लेने वाली वार्ता आती है। उसके इस घटन का पता चलने पर ग्वालियर के
राजा मानसिंह उसे कहीं कहीं सजा न कर उसे धिक्कार कर राजसिंह के पास भेज देते
हैं। अति में राजसिंह को नरसन मिलता है। तब वह नरसन के मन्दिर एवं मूर्तियों का
ध्वंस कर देता है। अति: कला उसकी भस्माण करती है, उसे छोड़कर चली जाती है। डॉ. शिवकुमार मिश्र रचित ‘दृवाधवनलाल वर्मा उपन्यास और कला’ में उन्होंने लिखा है कि
कला के राजसिंह की भस्माण का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए स्वयं लेखक वर्माजी ने उनको
जययात्रा की थी --

"जिस नरसन में कला, लालित्य और कोमलता का ध्वंस हुआ। उसमें राज्य
लोलूप राजसिंह के साथ कलावती कला घटन की उंची न होती हुई भी नहीं रह
सकती थी। राजसिंह भी वही अनुभव था और रहा, महल वनस्पति का अब तक उन
वृक्षों में छिपे हुए हैं। कला जैसी खींच के मुंह से मुझे राजसिंह की भस्माण करती
थी। कलावती न होती तो उस प्रकार की भस्माण उनके मुंह से असंगत बैठती।"51
इस प्रकार लेखक ने कला का चरित्र अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए रखा है। उपर्युक्त नारी-पात्रों के अलावा सुमनमोहिनी, मिली आदि नारी-पात्रों का नाम भी उल्लेखनीय है। इन पात्रों की भी अपनी अलग-अलग विशेषताएँ हैं। किन्तु ये पात्र उपन्यास में अपना विशेष महत्व नहीं रखते। वर्षों ये पात्र पटकाओं के विकास में सहायक अवश्य हुए हैं। वर्माजी के नारी प्रधान उपन्यासों में मुग्ननक्ति उपन्यास अपना विशेष महत्व रखता है।

अहिल्याबाई उपन्यास के नारी-पात्रों की विशेषता

अहिल्याबाई उपन्यास नायिका प्रधान उपन्यास की श्रेणी में निम्न जा सकता है। उपन्यास की नायिका के रूप में अहिल्याबाई का नाम मुख्य है। इनके अलावा गौण पात्रों में सिंदूरी एवं आमंत्र का नाम लिखा जा सकता है। इन नारी-पात्रों की उपन्यास में जो महत्वपूर्ण विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं, वह इस प्रकार हैं:

(1) अहिल्याबाई

अहिल्याबाई का जन्म ग्राम बौड़ी के एक साधारण परिवार में हुआ था। उनकी शायरी यस-बारह वर्ष की आयु में इतिहास अविश्वसनीय सुवर्ण युग में उनके पुत्र खूंटेरास ने होती है। पुरातात्विक जीवन के प्रारम्भ से अंत तक उनका साथ नहीं छोड़ा। उनके जीवन में एक के बाद एक उन्मuk आता ही रहा। पूरे उपन्यास में आदि से अंत तक अहिल्याबाई ही केवल स्थान पर है। अतः इस निकृष्ट रूप से कह सकते हैं कि उपन्यास की नायिका वह ही है।

अहिल्याबाई तेजश्वी नारी है। अपने जीवन में गीता कर्म को प्रधान में रखकर उन्होंने निरंतर जीवन के अंत तक तत्व किया। अतः उनका शरीर सुधील रहा। उनके रूपाकार का वर्णन करते हुए वर्माजी ने लिखा है—

"केशों का रंग सिलचौंचरी, मध्या चोड़ा, भौं भौं चंद्रियाँ हुईं, ओौं ओौं चंद्रि—
ढंढ़ी, चेहरा गोल भरा हुआ। कुछ बारिक झुंडियाँ आ गई थी, परंतु सोचने रंग में
छिपी-सी थी, होट निश्चय और उदासी के घोटक शरीर सुड़ील, कद मझोला आँखों में ऐसी चप्पित, ऐसा तेज जैसा योग्यों में सुनने आए है।” १७

इस प्रकार तिसरत वर्ष की आयु में भी उनका शातिरक तेज प्रसंसनीय था।

अहिल्याबाई अपने निष्पादक न्याय के लिए आज भी सुप्रसिद्ध है। जनता में सभी के प्रति उनका प्रेम समान था। प्रजा को उनके न्याय पर समृद्ध भरोसा था, अतः कोई भी व्यक्ति उनके सम्मुख निर्माण होकर अपनी फरियाद बताना चाहता था। समान स्पष्ट से न्याय के लिए वह प्रसिद्ध थी। झुंजा ही नहीं वह स्वयं को भी इससे अलग नहीं समझती थी। झुंजा ही नहीं वह कई निरस्त्रायों की सहायता भी करती थी। जैसे—

“अंधो, गौंडो — बहरो, लॅंगड़े-लूलो और अन्य निरस्त्रायों के लिए उनकी ओर से अन्नदाता था, जहाँ से उन्हें भोजन और दब भी मिलते थे।” १८

नीचे स्वयं धर्म अथवा समाज को अपनी उपयोगी करती है। वह धर्म को ही भारत के जन मन की सबसे प्रेक्षक तरीका समझती है। अतः वह कई मनिरो, पाटों, धर्मशास्त्रों आदि का निर्माण करती है। वह स्वयं तो हिंदू धर्म में अग्रणी आयुर्विज्ञानी थी किंतु फिर भी अन्य धर्मों के प्रति कोई दुर्भावना नहीं रखती थी।

अहिल्याबाई आदर्श मानवीय गुणों से सम्पूर्ण थी। धीम-धीमीयों के प्रति वह अग्रणी सहानूषता रखती थी। वह कभी किसी की रघुनिर्माणी बनकर रहना पसंद नहीं करती थी। अपनी गौंड-बहरी सेवका सिन्दूरी वाले घायल हो जाने पर अपने हाथ से महाम पद्धू बनने और सिर में तेज डालने जैसे घटनाओं मानवीय दृष्टि से अव्यंत महत्वपूर्ण है। अहिल्याबाई का जीवन निम्न लिपि सादगी से युक्त और किसी तपस्या से कभी नहीं माना जा सकता।

क्षमाशयन नारी के रूप में अहिल्याबाई का चरित्र उजागर होता है। दूसरों के प्रति उनका मन में अपार गौरव है। वह जानती है कि किसी भी व्यक्ति से कभी भी भूल से गलतियों हो सकती है। इसलिए वह दूसरों के द्वारा की गई भूलों को क्षमा करने की
उदास्ता प्रकट करती है। यह मल्हार राव के द्वारा की गई लूट-फाट की शिकायत को भी स्वीकार नहीं करती। वह डाकू बट्टूसिंह को माफ कर देती है।

गांधीजी के जीवन की तरह उनका भी सावधान एवं सत्यजीत जीवन था। बीमार होते हुए भी अहिल्याबाई ने मृत्यु के क्षण तक काम किया। पुजी मुक्काबाई के साथ ही जाने पर वह कुछ समय के लिए अकर्मण्य हो जाती है किन्तु शीघ्र ही कर्त्तव्याभिमुख होकर अपने कार्य में जूट जाती है। कर्त्तव्य परस्परता में आस्था और विश्वास करनेवाली अहिल्याबाई कहती थी कि —

"कोई यथि कुछ करने की धार ले तो उसके लिए बड़ी-बड़ी दूरियाँ पर का अंगण बन जाती है।" 

उसने सतगुण होने के बावजूद रानी के चरित्र में मानव सहज कुछ पुरवलताएं भी देखने को मिलती है। कई जगह पर आतंक मचाने के बावजूद वह मल्हार राव को माफ करती रहती है।

इस प्रकार हिन्दी उपन्यासों की सीर-चरित्र नाथिकाओं में अहिल्याबाई का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। रानी का प्रभावशाली व्यक्तित्व पाठक पर अपना जादू-सा प्रभाव डाले जिना नहीं रहता। अंततः रानी का चरित्र स्मरणीय और वन्नतीय है।

अहिल्याबाई के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर मित्रायामशरण प्रभाव लिखते हैं —

"अहिल्याबाई का जीवन-शैव ही मानो करुणा विशाल के घंटो ते निकलकर जीवनपरिचय कहोर साधनो और तपस्विय भूमियों से होकर अन्नतोगवा अवसाद और पीड़ा के उज्ज्वल ज्वार-भाटों से परिपूर्ण सागर में बिल्ली हो जाता है।"

(2) सिंदूरी

अहिल्याबाई उपन्यास के नारी-पात्रों में गोना पात्रों के अत्यंत सिंदूरी मुख्य है। कथा के विकास में सिंदूरी का योगदान महत्वपूर्ण है। वह एक साधारण वर्ण की चुमती
थी। दस-माघ वर्ष की आयु में ही माता-पिता का आश्रय छोड़ देनेवाली सिंदुरी अपने दूर के रिश्ते के भाई भोपत के साथ जीवन-निवाह करती है। उसके रूप-सौंदर्य का रोग करते हुए वर्माजी लिखते हैं—

“रंग सौंदर्य, जिसमें अरुणता और गरीबन की भी कुछ झालक थी। ओँके महीने आकार की, जिनकी पुतलियों भेंचर काली। आयु उसकी अटार लाल के लगभग होगी।”

उसके रूप-सौंदर्य से महलार प्रभावित भी होता है। किंतु सिंदुरी चारिशील युवती है। अतः वह मल्हार के द्वारा नहीं होती। जैसे—

“सिंदुरी पड़कर मुसकराई वह मुसकान, जिसकी प्रतीक्षा में मल्हार था। फिर सिंदुरी ने जरा सी भोगें सिकौड़ी और चलने को सिंदुरी ने हलका सा झटका देकर छुड़ा लिया और उपटकर दूर खड़ी हो गई।”

भोपत के हाथों मोरे मारा गया, जिसके प्रायश्चित स्वरूप वह बिरावरी के दौड़काना और बाहायों को भोजन तथा वान-डक्षिणा नहीं दे पाया। अतः उन्हें बिरावरी से निकाल लिया गया था। बिरावरी श्रद्धाभोपत के साथ सिंदुरी भी बिरावरी छोड़कर उसके साथ चली जाती है। भोपत के डाके के कार्य में भी सिंदुरी पूरा सहयोग देती है।

सिंदुरी में अच्छे-चूजे को पहचानने की समझदारी है। एक बार सिंदुरी का लेख अभिव्यक्ति के हाथों में आ जाता है। उसमें लिखा था—

“मल्हार बुझ है। उसकी कोई चात नहीं माँौँगी, मातृभी देवी है। उन्हें पाकर सब कुछ पा गई। उनकी दाया में आते ही बुझने-बोलने की मेरी शक्ति लोटने लगी, उनके चरण कभी नहीं छोड़ी।”

इस प्रकार सिंदुरी एक चुंब नागी है। वह धार्मिक अंध विश्वास है। इसलिए तो वह देवी पर अपनी जीवन कात्यायन प्राप्त देती है। वह बहुत पहले से ही थी, गृंगी भी हो
जाती है। दरित्रता के कारण यह भोपत के साथ डाकों भी भाग लेने को तैयार हो जाती है किन्तु अहिल्याबाई के समय में आगे पर उसमें आमूल परिवर्तन आ जाता है।

सिद्धूरी का अहिल्याबाई का साहित्य ही उसका सर्वस्व था। अहिल्याबाई के जीवन के अन्तिम क्षणों तक वह उनका साथ देती है। वह उनको देवी मानती थी।

इसीलिए तो वह अहिल्याबाई का पेह लाग करते समय बोली—

“देवी! देवी!”

देवी स्वरूप अहिल्याबाई के साथ रहने पर वह अपना जीवन धन्य समझती है।

समस्त श्रृंखला से कहा जा सकता है कि सिद्धूरी एक भोपती-भाली और चतुर नारी है।

वर्माजी ने उसके चरित्र को उपर उठाने का प्रयास किया और उसमें उनको सफलता प्राप्त हुई। सिद्धूरी के चरित्र से पाठक प्रभावित हुए बिना नही रहता।

(3) आनंदी

डाकू बद्रुसिंह की पूरी आनंदी एक साधारण वर्ण की नारी है। उसके पिताजी के साथ वह जंगल में रहती थी। किन्तु मल्हार के समय में आगे पर वह अपने पिता के साथ उसके साथ रहने लगती है। उपन्यास में उसका साधारण वर्णन है।

आनंदी रूप साँवरमायी नारी है। उसके रुपाकार का वर्णन करते हुए वर्माजी लिखते है—

“रंग गोष साँवलापन की ओर घटकता तुम्हा-सा। माथा सींकर आँखें बढ़ी और भूरी काली सपन भीतरों के बीच में गहरी सीधी रेखा जो उस पुंड़ली खोर में कजली भी मानुष होती थी।”

अपने इस रूप–सांवरम से कारण यह मल्हार को अपने रूप–जाल में फौस्तने की चेता करती है किन्तु मल्हार उसको छोड़ देता है। अतः वह मल्हार से अन्तिम से निर्विशेष लेने का प्रयास करती है। वह विविध प्रकार के झटपटों को रचती है। किन्तु अंत में मल्हार के
हाथों से ही उसका नाश हो जाता है। मल्हार के हाथों उसकी मृत्यु को देखकर हमारे
हृदय में उसके प्रति सहानुभूति उपन्यास हुए बिना नहीं रहती।

इस प्रकार आनंदी का चरित्र उपन्यास में एक प्रतिस्थाप भावना से जुड़ती
nारी के रूप में उभरकर हमारे सामने आया है।

इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में नारी-पात्रों का चरित्र-चित्रण सुन्दर हो गया है। उनमें अहिंसाबाधु एवं सिंहद्वार का चरित्र विशेष आकर्षक एवं कुशलता के साथ
विस्तृत किया गया है।

भूवन-विक्रम उपन्यास के नारी-पात्रों की विशिष्टता

भूवन-विक्रम उपन्यास वर्माजी द्वारा लिखित उत्तर वैदिक कालीन ऐतिहासिक
उपन्यास है। किन्तु प्रस्तुत उपन्यास का वास्तविक महत्व ऐतिहासिक कथा का रूप उपन्यास
करने की श्रमता में न माना जाकर मौखिक चरित्र-सृष्टि में ही माना जायेगा क्योंकि
उसमें ही जीवनावशेष, जीवन की समीक्षा और जीवन के वास्तविक रूप की व्याख्या
निर्धारित है। वैसे भूवन-विक्रम उपन्यास नाथु क्षण उपन्यास है। फिर भी उसमें नारी-
पात्रों का भी अपना विशिष्ट महत्व है। वर्माजी ने अपने उपन्यासों में केवल उच्च चरित्र
एवं गुणोद्भवी शिक्षा का ही चर्चना नहीं किया है बल्कि ऐसी शिक्षा का भी निर्माण
किया है जो अनेक दूर्गुणों से फरक है। उपर्युक्त का लिए प्रस्तुत उपन्यास की हिमानी का
चरित्र। इस उपन्यास में गौरी-हिमानी, ममता एवं अभिका आदि नारी-पात्र है। जिसमें
गौरी और हिमानी मृत्यु नारी-पात्र है। इन नारी-पात्रों की जो प्रमुख महत्वपूर्ण
विशिष्टताएँ हैं, वह इस प्रकार है –

गौरी:

gौरी उपन्यास की नायिका ही नहीं बल्कि जी-पात्रों में सबसे प्रमुख एवं
महत्वपूर्ण जी-पात्र है। वह उत्तर वैदिक कालीन आदर्श भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व
करती है। गौरी तेज़ साल की आयु में अपनी बुढ़ी माता और बुढ़ी पिता के साथ गरीब
बालिका के रूप में उपन्यास के प्रारंभ में दृष्टिमोचर होती है। वह अर्थात रूप-सौंदर्यमयी नारी है। व्याख्यानी उसके रूप-सौंदर्य का वर्णन करते हुए लिखा है —

“गीती की आयु तेज-चोटी हर्ष की और बहुत सुंदर लड़की थी। गीती इतनी सुंदर एवं रुचिती है कि जब हिमानी उसे देखती है तब अपने रूप एवं सौंदर्य पर शंका करने लगती है। और गीती के रूप एवं सौंदर्य देखकर उसे इर्दगिर्द होती है। एक क्षण के लिए वह उसकी सौंदर्य के साथ अपने सौंदर्य की तुलना करने लगती है — जैसे “क्या यह मुझे से अधिक दिया रही है? अरे नहीं — न मेरा जैसा रंग है, न रूप और न वेशपूर्ण।”109”

गीती वास्तव होते हुए भी स्वभावमानी एवं अपने नारीत्व की रक्षा करनेवाली नारी है। जब हिमानी उसे वस्त्र अलंकार इशारे देती है तब गीती इनकार करती हुई कहती है कि मुझे नहीं चाहिए। गीती नारीत्व की रक्षा करने में समर्थ है, उसे अपने स्वीकार का अभिमान नहीं है। धरुव का धरानबद्ध होने के पशात उसे मिलने न जाने पर भी वह अपने पथ पर अड्डा रहती है। वह किसी भी हार्दिक व्यक्ति की दिलों से नहीं बनती है। वह गंगा की भूषित निर्मल एवं पवित्र है। उसके चरित्र का मूलवांकन करते हुए समीक्षक सिवारामसार भ्रमण प्रसादजी लिखते हैं —

“गीती श्रद्धालु वंश की पूर्ण भारतीय उच्चारित की नारी है। जिसके अन्दर प्रेम का समर्पण, भावना का गाम्भीर्य, चरित्र की पुढ़ता, त्याग की महिमा और सेवा की तत्परता है!”101

आदर्श प्रेमिका के रूप में गीती का चरित्र हमारे समझ प्रकट होता है। उसका प्रेम धूमकेतु के प्रति पवित्र एवं निम्नलिखित है। वह अपने प्रेमी धूमकेतु की रक्षा करने के लिए अपने प्राणों को भी तुच्छ मानती है। जब उसके हिमानी और उसके सहयोगियों के बढ़ते विचार का पता चलता है तब वह अपने प्रेमी धूमकेतु तथा उसके परिवार की रक्षा हेतु हिमानी के यहाँ नीकरी में बनी रहती है। वह ग्न मन ही मन संकल्प करती है —
“भूवन ने प्रेम कसती हों, वह चाहे या न चाहे, मैं उसकी खुशी में अपने तन के खंड-खंड कर दूंगी। मैं उस अवसर पर दूर नहीं रह सकती। हूँसी भी तो दौड़ पड़ूँगी और जलती आग में कूद पड़ूँगी।”

गौरी तेजस्वी एवं चुदार नारी है। वह पद्मी-लिखी बहुत कम है। किन्तु फिर भी उसके ज्ञान एवं चालुर्च को देखकर भूवन को उसके प्रति इर्ष्या होती है। उसका भूवन से धोंगा - बहुत पद्मी-लिखी कहने पर भूवन गन में सोचता है –

“भूवन ने उस भोलीभाली सुंदर लड़की को बहुत बड़ा और उसके सामने अपने को बहुत दीना-झीना और छोटा अवगत किया।”

कर्त्तव्यानिष्ठ नारी के रूप में भी उसका चरित्र ध्यानाकर्षक है। अंत में जब गौरी हिमानी - मेघ आदि के पद्यंत्र को विफल बनाने में सफल होती है तब वह भूवन द्वारा उसके पिता सोमक ब्रह्म को कहने पर पिता के इर्ष्या को अपने भावी श्वसुर के सामने स्वीकार कर लेता है। अंत: जब गौरी अपने कर्त्तव्य पर अड़क रहती है तब राजा सोमक उसके द्वारा दिये गये कुछ स्वर्ग एवं रजत, सिंह, इर्ष्या व उसके ब्याज के रूप में स्वीकार कर लेता है। इस प्रकार गौरी अपने बुद्ध मुक्त विश्वास का इर्ष्या चुकाकर अपना कर्त्तव्य पूर्ण करती है।

क्षत्रिय कुम्भ गौरी साहसिक एवं वीर नारी है। उसका प्रेमी भूवन जब भगवान की मूर्ति के सामने प्रणाम करने के लिए सिर झुकाता है तब हिमानी छूटी द्वारा उस पर चांद चारना चाहते है। किन्तु इसके पहले गौरी की छूटी खिच आती है। गौरी प्रचंड वेग के साथ हिमानी की छूटी वाली बाँड को अपनी बाहर में जड़कर जोर का झटका देती है। हिमानी चक्कर खाता है। जैसे –

“गौरी ने इसने वेग के साथ उसे अपने घुटने की हूल दी कि हिमानी आँखों जा पड़ी। वह हिमानी की पीठ पर चढ़ जैटी।”

इस प्रकार गौरी के चरित्र में साहस एवं वीरता का गुण भी विचारमान है।
ग़ौरी शांत एवं ध्यानयान भी हैं। तभी तो वह भुवन एवं हिमानी के विवाह का पता चलने पर भी शांत रहती हैं। वह किसी को भी अपने प्रेम तथा भुवन ने जो पत्र बनाने की प्रतिज्ञा खार्दी थी, वह भी नहीं बताती। हिमानी, मेघ आँखि सोमक एवं भुवन को मारने का चक्करत्र रखते हैं तो भी वह भुवन का सहाय मना करती है। किन्तु जब मौका आता है तब वह उसका भयाण फायदा उठाती है। इस प्रकार उसका यह रूप सफल है।

ग़ौरी सहानुभूति की मूर्ति बनकर हमारे समस्त प्रकट होती है। उसकी महात्म्पूर्ण विशेषता है उसमें अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की शक्ति है। अपने द्वारा भुवन का अपरिमेय पार लेकर भी वह उनका आभास नहीं होने देती। वह अपनी भावनाओं को द्वारा की किसी कोने में छिपाकर रखती है। भुवन द्वारा उसका विवाह के लिए प्रतिवेद्ध होकर भूल जाने पर भी वह उसका सहाय कर लेती है। भुवन के सामने जाकर उसकी शिकायत नहीं करती।

कुछ मिलाकर ग़ौरी अपने प्रेम में सफल नायिका है। उपन्यास के आरंभ से अंत तक वर्माजी ने उनको केन्द्र स्थान पर रखा है। वर्माजी ने उसके चरित्र में किसी भी प्रकार की दुःख रहने नहीं थी।

(२) हिमानीः

भुवन-विक्रम उपन्यास के नारी — पात्रों में हिमानी महात्म्पूर्ण स्वीकार है। समय दुर्लभ से वेश्याने पर वह खालनायिका के रूप में कुरा गायक होती है। हिमानी विवेकी भोजन नील जिसे अंग्रेज विशेष विशेष परिवार का प्रतिपूर्त कहा जा सकता है, उसकी इक लोही लाइली बैंटी थी। हिमानी मालिकिन्य है। धनिक पृथ्वी होने के कारण वह अत्यंत घमंडी एवं गर्वीली भी है। वर्माजी ने उसके अनेक पहलूओं को सामने रखने का प्रयास किया है। उसकी चारित्रिक विशेषताओं इस प्रकार है—

हिमानी रूप-सौंदर्यमयी नारी है। उसके रूपबार का वर्णन करते हुए वर्माजी लिखते हैं—
“हिमानी का रंग गेहुए से जरा ज्यादा गीरा था, औरें भूली एवं बड़ी थी बरोबरियां लम्बी तथा औरें पर सिकुड़न गहरी। नाक सीधी एवं सुंदर गोरे चेहरे के लाल नमक ले होठों।”

अपने रूप-रंग का उसे अभिमान है। वह अपने सामने दुनिया को तुच्छ समझती है। उसके रूप साँची रंग से प्रभावित होकर दीर्घवाह हम ही हम उसे चाहते लगता है।

दीर्घवाह हिमानी से कहता है—

“आपको देख लिया तो मानो सारी दुनिया देख ली और पा ली।”

कृष्ण स्याहब जी की नाई के रूप में भी वह उपस्थान में यवाक्ष्या वेदनाये को मिलती है। अपने नौकरों को वह पूरा भोजन नहीं बताती। वह अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार है। वह बालबेच से प्रार्थना करती है, उसमें भी उसकी कृपायेत वेदनायें को मिलती है।

हिमानी कोई एवं अहंकारी खींच के रूप में निकटाई बताती है। उसके अपने रूप एवं ध्वनि पर बड़ा गर्व है। हिमानी अहंकारी होने के साथ-साथ स्वाभिमानी भी है।

इसीलिए तो वह भूमन के स्था को निकास नहीं बताती और गर्व से अपना परिचय बताती है।

यदि रथ ले कर सरयू नदी की ओर अपने खेत पर आती है तब दासों को बैठे हुए देखकर उसका क्रोध उमड़ पड़ता है।

हिमानी प्रतिहार की माध्यमावाली नारी है। जब कपिलज उसके सामने बोलता तब वह क्रोध में आकर रात के समय में अपने मनव में भीतरी कमरे में बौंधकर ढुंढ़ी तरह से पिटाया है। भूमन के द्वारा पीठ पर चामुंड स्थाने से वह वद्यंत्र रथकर बनला लेने के लिए मेंग एवं नील के कहने पर भूमन के साथ शादी के लिए तैयार हो जाती है।

दृष्टि और कपट नीतिमयी नारी के रूप में उसका चरित्र ध्यानाकर्षक है। अपने कपटाचरण द्वारा दीर्घवाह को जाल में आक्रम कर उसके साथ विवाह का प्रलोभन फेंकर
अपना उत्तम सीधा करती है। वह अपने पिता मेघ, दीर्घवाहु आदि के सहयोग से भुवन और रोमक आदि के सर्वनाश का भयानक पड़वौं रचती है। वह भुवन को शादी के बहाने समाप्त कर देना चाहती है।

हिमानी अंध-श्रधाधामु एवं भूतप्रेत से इर्रन्तंवते स्वी भी है, तभी तो वह जब गौरी अपने माता-पिता को नदी में, बड़े मार लड़ने का स्वयं देखकर चौक फड़ती है तब हिमानी घर जाती है और उसे लगता है कि इसके साथ प्रेत रहते हैं। वह गौरी से बार-बार कहती हैं -

"हमारे बड़े देवता ‘बालदेव’ का भजन-पूजन किया करो। भवन में ही उनका मंदिर है।"

संक्षेप में हिमानी का चरित्र अनेक दुर्गुणों से बुर्का है। वह यह पातकों की धृष्टि का पात्र ही बनती रहती है। वर्माजी ने उसके चरित्र के किसी भी पहलू को अहुदुता नहीं रखा है।

(३) ममता:

ममता प्रस्तुत उपन्यास के गौरी नारी-पत्रों के अंतर्गत उल्लेखनीय है। उसके चरित्र के वर्णन से उपन्यास के कथानक के विकास में सहायता मिली है। ममता राजा रोमक की पत्नी एवं भुवन की माता है। वह अद्वैत अवस्था की सुंदर गौरी साहित्यी नारी है। उसकी परम्परागत निरूपणार्थ इस प्रकार है -

रानी ममता आदर्श महिममात्री नारी है। राज्यचुना रोमक को वह श्रेष्ठ संथाती है। अपने पति रोमक का वह जनता के सम्पर्क स्थापित करने की सम्भाव्यता देकर अपना कर्तव्य निभाती है। उन्होंने और जुंआरी होते देखकर भुवन को शुभकाल में भेजने में भी उसका मारू हवेन हिर्जिकिचाता नहीं। रानी ममता बुद्धिशालिनी नारी है। वह शुष्कों को भी श्रम की पवित्रता का प्रतीक मानती है। भुवन को आश्रय में भेजते समय उसके ये उपगार ददत्य है -
“जैसे ब्राह्मण बुद्धि के, वैश्य राज्य सम्पत्ति के, शुद्ध श्रम की पवित्रता के प्रतीक माने गए हैं वैसे ही क्षत्रिय वीरता और बलिदान के, और चिरंजीव आंकड़ा से समृद्ध बचना, आंकड़ा अध्यपतन का दार था।”

रानी सम्मान एक क्षत्रिय नारी है। उसके जीवन में एक के बाद एक समय खड़ी होती है। उसका पति सोमक ऐसी अवस्था में दुखी होता है, रोता है किंतु वह कभी भी दुखी नहीं होती। वह अपने पति को समय-समय पर धेरांगे धंधाता है। श्रीफ़ाणि नारी के सभी गुण उसमें दिखाई देते हैं।

अंततः हम कह सकते हैं कि वर्माजी ने उसके चरित्र के सदृश्य को ही लिया है।

वर्माजी की बुद्धि में वह समानार्थी है। पाठक को भी उसके प्रति मान उत्पन्न होता है।

(५) अभिव्यक्ति:

अभिव्यक्ति धौँये के में रहनेवाली एक गरीब परिवार की अपनी भोली-भाली एवं बवालु लड़की है। लेकिन उसका सौंदर्य एवं स्वभाव बहुत निराला है। इसके साथ-साथ वह स्वाभाविक नारी है। किसी के भी सहारे जीना उसे स्वीकार नहीं है। इसीलिए वह साहुङ्क लोगों की गायबः चराकर अपना जीवन निर्धारित करती है।

उसके चरित्र के सामने आने से तुरंत पता चलता है कि वह यद्य पति एवं बातुंगी है। गोरी अपने माता-पिता के साथ नैमिषार्थ्य के जगत में जाती है। वह उनको अभिव्यक्ति मिलती है। उस समय विना पूछे ही अपना परिपाय अभिव्यक्ति इस प्रकार बताती है:

“और मेरा नाम अभिव्यक्ति है। दीय रहा। सी गाएँ कोई साल-भार चराये तो दो गाएँ मजु़ी में मिलती है। और दोनों जून दूध पीने को। कयों, गोरी? मैं भी गाएँ चराती हूँ, और गाएँ चराने के समय गीत भी गाती हूँ।”

वह परोपकारी एवं बवाल नारी है। जब नैमिषार्थ्य में गोरी एवं उसके माता-पिता से उसकी मुलाकात होती है तब उनकी व्यापा-सुनकर वह सज्ज रह जाती है। अतः
यह उन तीनों जनों को अपने गाँव में ले जाकर एक मकान बिलासी है। तथा उनके लिए योग्य काम भी हूँद बेटी है।

एक आदर्श सच्ची के रूप में अभिका का चरित्र हमारे सामने उजागर होता है। अपनी सच्ची गौरी का जंगल में गायें चराते समय शूरुव ने साथ प्रेम देखकर वह उनके प्रेम को गाढ़ा बनाती है। अपनी सच्ची गौरी को प्रेम में आगे बढ़ने के लिए वह हिम्मत जुटाती है। तथा वह उसको मदद भी करती है।

कुल मिलाकर अभिका आदर्श सच्ची होने के साथ-साथ अनेक सबूतों से सुझावित है। निर्मलाभ अभिका का चरित्र उपन्यास में अपना निजी महत्त्व रखता है।

इस प्रकार शूरुव मिलाकर उपन्यास के नाथी-पात्र अपना विश्लेषण महत्व रखते हैं।

महारानी दुर्गावती उपन्यास के नाथी-पात्रों की विशेषता

महारानी दुर्गावती उपन्यास नाथिका प्रशासन उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास की नाथिका महारानी दुर्गावती ही है। उपन्यास के गौण नाथी पात्रों में समजरे का नाम, उञ्जूंगनीप है। यथापि उपन्यास में समजरे का विस्तार से साथ वर्णन नहीं मिलता।

(१) दुर्गावती:

महारानी दुर्गावती उपन्यास के नाथी पात्रों में दुर्गावती मुख्य है। उसके बीच से लेकर गृहुप तक के विश्वास पहलुओं को उपन्यास में उजागर करने का प्रयत्न किया गया है। उसकी चारित्रिक विशेषताएं इस प्रकार हैं-

दुर्गावती कालिकर जो राजा की तत्त्वसिंह की इकलों की बेटी है। सुमाय उसकी बेटी है। बाण एवं तलवार चलाना, संगीत एवं चिकित्सकता में वह निष्पुष्प है। वैष्णव ओर साहसी दुर्गावती जंगल में जाकर तेजपुर, अरसे आत्मा का शिकार करती है।

दुर्गावती प्रेममय नाथी है। वह किसी भी व्यक्ति के प्रति बुद्धि-पूर्वक प्रेम करती है। उसके योग्य समझौतावारी है। अपनी सच्ची समझौते के द्वारा राजा दलपति शाह के शौर्य का वर्णन सुन दुर्गावती को उसके प्रति प्रेम-भावना जागती है। इसने ही नहीं
उसको अपने राज्य के प्रति भी अग्रथ प्रेम है। अपने राज्य पर आक्रमण करनेवाले बाजबहादुर सुलतान को कई बार हरा चुकी है। दिल्ली के बादशाह का फर्साना पहड़कर क्रोधित होकर इसका जवाब लिख भेजती है। जैसे —

"श्ली होने पर भी मैं तुम सरीखे पुरुष की अपेक्षा राज्य दण्ड धारण करने के अधिक योग्य हूँ, तुम सरीखे दिल्ली सम्राट से जो एक महिला का उपामन करने के हेतु इतने नीचे उतर आया है। सफेद हाथी तो क्या उसका बाल भी भेट नहीं किया जा सकता है और हमारी दीवान ऐसे पुरुष के समान हमारी इस नाही को लेकर नहीं जाएगा!"  

इस प्रकार उसमें स्वराज्य प्रेम के साथ साथ शौर्य और साहस भी ठहराने का मिलता है। आवश्यक पत्री के रूप में भी उसका चरित्र ध्यानाकर्षक है। विवाह के बाद दुर्गावती पतिपरवरण और पति के लिए सलाहकारिणी बन जाती है। जब राजा दलपति शाह शीमार पड़ते हैं, तब वह उसकी सेवा-चाकरी करती है। साथ ही राजकार में सहायता भी करती है। उन्हें सलाह-सूचना भी देती है। जैसे —

"तालाब खूबबाए, बैंधवाये जावे, तो किसानों को कब्ज नहीं उठाना पड़ेगा और राज्य की आव भी बढ़ जाएगी। उधर जुड़ीती में चन्देलों ने मरा मगरमच सदैव-बड़े बैंध बैंधवाये, नहरे खुदबाई और किसानों के परों में सोना बसाया।"  

दुर्गावती प्रजा पातक महाराणी है। पति की मृत्यु के पश्चात वह राज्य का भार अपने उपर लेकर निर्माणं माता से जनता की सेवा करती है। वह जनसंतति के लिए कई महत्वपूर्ण योजनाएं बनाती है। साथ ही उसको कार्ययोजनाः भी करती है। वर्मजी ने प्रस्तुत उपन्यास के परिचय में उनकी जन-सेवा के संबंध में लिखा है —

"दुर्गावती ने और भी अनेक तालाब जगह-जगह खूबबाए, बैंधवाये। मन्दिरों का निर्माण गड़ता में, नर्मदा के प्रसिद्ध स्थान बेड़ा घाट पर और कई स्थान पर करता। इनमें से आज भी कई विभाग है।"
दुर्गावती सहस्रय नारी है। एक बार शेरसाह की सेना के साथ महाराणी दुर्गावती की सेना के साथ घमसान युद्ध होता है। युद्ध मृत्यु में वह अपने शरीर के प्रति सहारका प्रकट करती है। सुधरसिंह महान गोपालराव के रूप में आकर राजा के शरीर की सहायता करते—करते धार्यत हो जाता है तब महाराणी दुर्गावती उद्यास के साथ उसकी धिक्कत करती है और उसकी संभाल करती है। वह अपने सैनिकों से कहते हैं—

"नहं बेटा, उसे भी साथ ले चलना है, नहं तो मुगल सरदार उसका या थोपिए चिंता न रहेगा।" 113

दुर्गावती न्यायप्रिय महाराणी है। वह प्रजा की छोटी-सी छोटी बात को सुनती है, समझती है और उसे शुल्कने का प्रयास करती है। एक बार चन्द्रसिंह को प्रचीर हजार रुपये की एक तीनी मिलती है। वह उसे दुर्गावती को देता है। दुर्गावती उसे अपने पास नहीं रखती और उसे उसके मालिक को पहुंचाना देती है। न्यायप्रियता इन शब्दों में व्यक्त हुई है—

"उसे नहं स्खा जा सकता रोडी पिटवाई जायेगी। जिसकी होगी प्रभावित करके ले जायेगा। हमें उसके स्खने का कोई अधिकार नहीं।" 114

अंततः उसकी चारित्रिक विशेषताएँ डॉ। द्वारिका प्रसाद सक्सेना के इन शब्दों में व्याख्या ही व्यक्त हुई है—

"दुर्गावती एक बीर नारी थी, उसमें कर्मयोग की भावना था, उसकी लगन, उड़ता, बुझिमता, रण-कौशल एवं निर्भीकता को देखकर अक्षर जैसा सम्राट भी चकित हो गया था।" 115

एवं दादी ने हम कह सकते हैं कि दुर्गावती एक दीर्घावना नारी है। दरम्यान ने आदि से लेकर अंत तक सम्मुख उद्यास में उसके विभिन्न पहलुओं का कुशलता के साथ चित्रण किया है। निस्स्तेह दुर्गावती का अमर चरित है। अपनी चारित्रिक विशेषताओं के कारण वह पाठक पर अभिमन छा छोड़ जाती है।
(2) रामचरी:

महारानी दुर्गावती उपन्यास के गीत साधन-पात्रों के अन्तर्गत रामचरी का नाम
विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आदि से अंत तक वह उपन्यास में दुर्गावती की सहायता
करती हुई निवादित देती है। थोड़ी उपन्यास में वर्णजी ने उसका विस्तार के साथ वर्णन
नहीं किया किन्तु फिर भी उसका जो रूप उपन्यास में उजागर हुआ है। वह इस प्रकार
है –

आदर्श साथी के रूप में रामचरी का चरित्र विशेष रूप से व्यापकतम है। वह
दुर्गावती की सहेती है। रामचरी दुर्गावती के साथ जंगल में झंकर खेलने के लिए भी
जाती है। दुर्गावती का परिचय रामचरी ही राजा वल्लभ शाह को देती है। वह दुर्गावती
के विवाह में रथासंभव प्रयास करती है।

यद्यपि में भी रामचरी तूलत है। वह दुर्गावती के साथ युद्ध में जाती है। वह
शहीदों का सामना कुश्तित के साथ करती है। वह हर समय दुर्गावती के साथ रहने का
प्रयास करती है। वह समझदार भी है। अतः कोई भी कार्य वह बूढ़िवृक करती है।

रामचरी संदेशावली का काम भी करती है। सुधरसिंह रामचरी के द्वारा ही
अपना पाणिध्वन का संदेश दुर्गावती तक पहुँचाता है। राजा वल्लभ शाह को भी वह
दुर्गावती का संदेश समय-समय पर देती रहती है।

अंततः भोली -भाली रामचरी का चरित्र आदर्श साथी के अलावा विशेष रूप से
उभरता नहीं है।

निश्चयतया कहा जा सकता है कि महारानी दुर्गावती उपन्यास के नारी-पात्रों का
अपना विशेष महत्त्व है। वर्णजी ने दुर्गावती के चरित्र पर ही अपना ध्यान विशेष रूप
से केन्द्रित किया है।
रामगढ़ की रानी उपन्यास के नारी-पात्रों की विशिष्टता :

रामगढ़ की रानी वर्माजी का लघु ऐतिहासिक उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में नारी-पात्रों की अपेक्षा पुरुष-पात्रों की संख्या अधिक है। इसमें नारी-पात्रों में केवल अवन्तीबाई का नाम ही विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अवन्तीबाई के अलावा इस उपन्यास में कोई भी नारी-पात्र नहीं है। अन्य उपन्यासों में नारिका को सहायक नारी पात्र मानव करती हुई विख्यात देती है, जबकि इस उपन्यास में नारिका अवन्तीबाई को पुरुष पात्र सहायता करते हुए विख्यात देते हैं। यहां हम सिर्फ अवन्तीबाई की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालेंगे।

(१) अवन्तीबाई:

अवन्तीबाई वर्माजी रचित रामगढ़ की रानी उपन्यास का महत्वपूर्ण नारी पात्र है। वर्माजी ने उपन्यास के आरंभ से अंत तक केवल अवन्तीबाई के चरित्र पर ही ध्यान केंद्रित किया है। उपन्यास की सभी प्रमुख घटनाओं अवन्तीबाई से सम्बंधित हैं। अवन्तीबाई की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए डॉ. उपा भट्टाचार्य ने लिखा है—

"रानी अवन्तीबाई तो चर्चा भारतीय पत्रिका, शासक और शैली की जरूरी प्रतिमा है।"

सौंदर्यमय नारी के रूप में अवन्तीबाई का चरित्र हमारे समकालीन प्रकट होता है। छब्बीस-सताईस वर्षीय अवन्तीबाई देखने में बहुत सुन्दर थी। उसके सौंदर्य का वर्णन करते हुए वर्माजी लिखते हैं—

"उनकी आवृत्त छब्बीस सताईस के लगभग होनी। वे ही छही छपड़, रंग गोरा। आँखें बड़ी-बड़ी। भोंटे घनी और लंबी हिर्जी हुई। नाक सीधी, चेहरा गोल। सूंदर तो ही ही, चेहरे पर शक्ति छाई हुई थी।"

203
सौदर्मय नारी होने के साथ-साथ अवनतीबाई धीर और साहसी नारी है। वह युद्ध में कूद पड़ती है। युद्ध में बहुत से लैनिक मारे जाने पर भी वह अपना साहस नहीं छोड़ती। युद्ध भूमि में उनके ये उदगार उनकी धीरता और साहस को प्रकट करता है।

"लड़ते-लड़ते मर भले ही जाड़े, परंतु परदेशियों के भार से लड़ती नहीं।" ।

उनकी धीरता की भावना उनके शब्दों में भी प्रकट है -

"मेरे नाम पर नहीं मेरे नाम पर नहीं। देश के नाम पर, धर्म के नाम पर,
राजा राजकीय के नाम पर मैं लड़ती हूँ और वे सब भी इसी पर लड़ते।" ।

अवनतीबाई युद्ध प्रतिभाशील नारी है। उनके सुंदर स्वर्ण श्रृंग की भावना अच्छी है। फिरियों को अंतराल से देश की जनता को ग्रहिमाम पुकारते देख वह उमरसियल और उनके सियाहों के समझ यह प्रतिज्जा लेती है -

"देश में एक भी बूढ़ रक्त जब तक रहेगा इन फिरियों से लड़ती है। न चेन
लूंगी और न चेन लेने लूंगी।" ।

न्यायप्रिय महाराणी के रूप में भी अवनतीबाई हमारे सामने उपस्थित होती है।
गरीब जनता को कोई अन्याय करे वह उनको स्वीकार नहीं है। कंपनी सरकार गरीब
जनता से कर ध्वस्त कर उनको सताने का प्रयास करती है तब वह सब अन्याय
अवनतीबाई से देखते नहीं गया। इसीलिए जनता की ख़ास का भार वह अपने उपर लेती है।
वह कंपनी सरकार के विरुद्ध लड़ती भी है।

रानी की न्यायप्रियता के कारण ही जनता को उन पर विश्वास था। रानी
अवनतीबाई इतनी जन्मप्रिय हो गई थी कि जनता उनके लिए अपना सों कर देने को भी
तैयार थी। इसीलिए तो उनकी एक ही हाकल पर सारी जनता अंग्रेजों से लड़ने के लिए
तैयार हो गई थी। जैसे -

"सभी वग़ाँ के थे। रामगढ़ के कुछ सुनार भी बड़े उत्साह के साथ शामिल
हुए। मूँहिया रंग की बस्ती में थे। दोनों सेवको और तलवारों से सजे हुए।" ।
अन्तिवादी धर्मप्रेय नारी भी है। किन्तु साथ ही वह अन्य धर्मों का स्वीकार भी करती है। ईसाई श्रद्धावादी कंपनी के सर्वोच्च भारतीय धर्म को दबाकर उसके स्थान पर ईसाई धर्म का प्रचार करना चाहते हैं और लोगों को अपना धर्म बदलने के लिए दबाव भी डाला जाता है। किन्तु रानी अंतिवादी को अपने धर्म पर स्वामित्व कर नहीं कर सकेगा।" \[113\]

अंतिवादी सेवाप्रदायक नारी है। जनता की रक्षा करना वह अपना धर्म समझती है। वह निष्ठावादी होकर जनता की रक्षा के लिए कंपनी सरकार के विरुद्ध लड़ती भी है। वह सहयोगी नारी की तरह अपनी जनता के दुःख में दुःखी होती है। जब तक पड़ने पर वह जनता को आपसी संघर्ष गतिविधि भी करती है। उनके इन उद्योगों से उनकी निष्ठावादी सेवाप्रदायकता का पता चलता है। --

"में अपने किसानों की सेवा-सहायता करती आई हूं। आप में भी करती रहूँगी, फिर जब वह चढ़ी आएगी, देखूँगी।" \[113\]

वह चटत्र शासिका है। किरोंगियों के विरुद्ध लड़ने के लिए वह रणनीति बनाती है। पुरुष भी उनके बुद्धि-चालात्मक व्यक्ति की सहायता करते हैं। उनके द्वारा सरकार और पास से मेंजी जानेवाली पुंडिया में लखा था।

"देश की रक्षा करने के लिए या तो कमर कसो या चूड़ी पहनकर घर में बंद हो जाओ। नमुंदे धर्म-ईमान की सीमांध है जो इस कागज का सही पता बेबी को दो।" \[138\]

अंत में हम कह सकते हैं कि वर्माजी ने अंतिवादी के विभिन्न पहलुओं को अल्पकाल महाकाल के साथ हमारे समस्त प्रकट किये हैं। वह एक बीर नारी है। जो अपने शर्म एवं तंजस्विता के कारण इतिहास में अपने छप्प छोड़ गई है।
मुसाहिबजुल उपन्यास के नारी-पात्रों की विशिष्टता

मुसाहिबजुल उपन्यास नायक प्रधान है। इसमें बर्माढी ने मुसाहिबजुल को ही केन्द्र में रखा है। किन्तु फिर भी मुसाहिबजुल की पतिव्रता तथा नायिकाओं की नियुक्ति सुझाव अन्य कोई भी नारी-पात्र नायक या नायिका को मचव कर्ते हुए देखने को नहीं मिलते। अतः हम यहाँ सिर्फ़ चर्चारीवाली की ही चारित्रिक विशिष्टताओं को उजागर करने का प्रयास करेंगे।

(१) चर्चारीवाली:

मुसाहिबजुल उपन्यास के नारी-पात्रों में चर्चारीवाली का चरित्र प्रधान एवं नायिका के रूप में उभरकर हमारे सामने आता है। वह चर्चारी के राजा की बेटी एवं केन्द्र का जागीरदार ऋतीपसिंह मुसाहिबजुल की पत्नी है। उपन्यास के नायक मुसाहिबजुल उजाला बनाये रखने के लिए वहां उनके प्रयास करता है।

चर्चारीवाली कर्त्ताव्य नारी है। पति के सूख-सूना में भाग लेना वह अपना कर्त्तव्य समझती है। मुसाहिबजुल के पास बहुत सम्पत्ति हैं और उनका पालन-पोषण करना उनके योग्य वेतन भी होता है। किंतु एक बार वहें हाथों में देने के लिए वहें नहीं थे। पति को चित्रित देखने पर चर्चारीवाली कहती हैं —

"लतिई माते की मार्गत किसी बड़े साहुकार के यहाँ से हुए दिखा लेती। मेरे पास एक नया कम से कम हजार रुपये का है।" २३२

चर्चारीवाली उदासर्वा नारी है। अपने पति पर संकट आपने पर नारी का मान बढ़ानेवाले आभूषणों को भी उन्हें समझती नहीं है। अब उसके पता चलता है कि पति के हाथों में अब दाम नहीं है और सैनिकों का पेंट भरना कष्ट साध्य हो गया है तब वह मुसाहिबजुल को उदार हवाय से कहती हैं —
"वे पहुँचियाँ उसको बेड़ा कुंजी के यहाँ भेज चुके है। पांच सो रूपए इतनी समय
ले आवे। रूपए आते ही सुपुत्र भंडार की कमी को पूरा करो और भोजन तैयार
करो।"\(^{119}\)

रविभारावाली स्वाभिमानी नारी है। उनके पास अपने स्वाभिमान को बनावे
खरीद के लिए सुझाव भी है। एक बार चर्चारावाली के पति मुसाहिबजू के सामने
उसके आवद्धों की राखा का प्रश्न उठता है। अर्थ: यह अपनी पत्नी - चर्चारावाली से
र्मी के पास जाकर मदद करने की याचना करता है। अत: यह सोचती है कि अगर
मना करेगा तो मूठे अपमानित होना पडेगा। अत: यह अपनी सुझाव पर मुसाहिबजू
को कहती है -

"मेरी र्मी के पास चली जातीं पंतु वे कुछ न करेंगी और न कर सकेंगी,
उनकी नहीं चलेंगी। मेरा मान घटेगा।"\(^{119}\)

आदर्श पत्नी के रूप में चर्चारावाली का चरित्र विशेष रूप से महानकृति करता
है। पति के हर संकट में वह हर संघर्ष प्रथाल करती है। वह पति की इजजत में ही
अपनी इजजत समझाती है। मुसाहिबजू के सैनिकों पर डाका का इलजाम लगाया जाता
है। तब चर्चारावाली अपने पति मुसाहिबजू को बेकाबू से बचाने के लिए मुसाहिबजू
से कहती है -

"मेरी अभी राजा के पास समाचार भेजती हूँ कि गाजा मेरे पास है और डाका
मैंने दलवाया था।"\(^{119}\)

निकायतह गम कह सकते हैं कि चर्चारावाली आदर्श पत्नी के रूप में ही उपन्यास
में विशेष रूप से हमारी ध्यान केंद्रित करती है। चर्चारावाली के चरित्र पर प्रकाश
डालते हुए सिगारामध्यर्ण प्रसाद लिखते हैं -

207
“यह पत्री उसी प्रकार उच्च है जिस प्रकार बुध की यशोधरा, लक्षण की<br>दृष्टि। यह सहिष्णुता-सहज्यता, उदास्ता की प्रतिमूर्ति है। निश्चय ही चरित्रारी का चित्रण भी भ्यामायिक और सफल हुआ है।”

माधवजी सिद्धिया उपन्यास के नारी-पात्रों की विशिष्टता

माधवजी सिद्धिया उपन्यास नामक प्रथान ऐतिहासिक उपन्यास है। उसमें कोई भी नारी - चरित्र नायिका के रूप में विशेष रूप से उभरकर हमारे सामने नहीं आता किंतु सिफ़ू क्रम बेगम का चरित्र ही ऐसा है जो नायक के सहायक पात्र के रूप में ध्यान आकर्षित करता है। प्रस्तुत उपन्यास के चरित्रों का विभाजन कश्च से हुए शास्त्रीय सिद्धांत ने लिखा है -

“कथा विकास में अग्रसर मुख्य पात्र माधवजी सिद्धिया शिहाबुद्दीन नजीब, ग्रंथा बेगम, बूजुमल।”

इस प्रकार ग्रंथा बेगम प्रथान नारी पात्र है। मीफ़ नारी-पात्रों में गोपिकावाई नाम विशेष रूप से उभरकर प्रधान है। उपन्यास में ग्रंथा बेगम, गोपिकावाई के अलावा जो नारी-पात्र हैं, उनका सिफ़ू नागमलुक है। अत: हम यहाँ केवल ग्रंथा बेगम और गोपिकावाई के चरित्र पर ही प्रकाश डालेंगे।

(१) ग्रंथा बेगम:

ग्रंथा बेगम सामाजिक युगीन पदविलित नारी का प्रतीक है। वह किसी सहज्य प्रयोग को सर्वमार्ग अर्थित करने के लिए आतूर दिखाई देती है। ग्रंथा बेगम बॉक्स जात साध्विक मार ज्ञान को पहली झलख पर मुख्य हो है। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार है -

ग्रंथा बेगम अत्यंत सौंदर्यमय नारी है। ग्रंथा बेगम सौंदर्य से मुख्य होकर ही शिहाबुद्दीन उसके साथ शादी कर लेता है। उसके चरित्र की विशिष्टता इस बात में है कि उसे अपने सौंदर्य का अभिमान नहीं है।
गंगा बेगम सेविका के रूप में हमारे समझ प्रकट होती है। पंजाब पर अब्दाली के आक्रमण के समय अब्दाली की भतीजी मुगलानी बेगम और अब्दाली की इच्छा के अनुसार शिहादतुद्वीपी को मुगलानी बेगम की लड़की उद्धा बेगम के साथ शादी करनी पड़ती है और गंगा बेगम को उसकी सेविका के रूप में रहना पड़ता है।

माधव गंगा के समीप प्रिय पुरुष या आक्षेपवाद मात्र नहीं है। वह उसकी श्रद्धा, स्नेह एवं तममता का पात्र है। माधव इंद्र है तो गंगा उसकी साधिका गाथिक। गंगा के लिए माधव के तीन अंशों में अपने प्रिय ब्रज के माधव की युगल मूर्ति का साहस स्वरूप है।

गंगा का आर्कर्क अविस्त नहीं है। कोई भी अविक रहज ही उसके सौंदर्य से प्रभावित होकर उसे अपनी बनाने के लिए तैयार हो जाता है। माधव के साथ गंगा गुर्जी के पुरुष वेष में रहते हुए भेद खुलने पर माधव और गंगा का स्नेह प्रत्याशा का उपासना कर लेता है। गंगा के प्रति माधव का सहानुभूति है। इसके साथ —साथ उसे प्रेम भी है।

“(गंगा) बदूला नहीं है, प्रकाश बिनु है। माधव के प्यार में ओड़ायन कभी नहीं पाओगी हम। अपना गायन माधव को सुनाती रहता और माधव के माधव को और दोनों के सांसारिक संबंधों को होले हुए प्रोड्र इदर परमस्मि आते हैं, शास्त्रीय संतोष के अपेक्षा आत्मस्व नेक्यू और तृप्ति की खोज में।”

गंगा सामना युगीन जन्त पर्यवेक्षा नारी का प्रतीक है जो तथा कथन पति की क्रीततावी और लोगोप्रीय के गन-बहलाव की सामग्री बन जाती है। वह आचार्य का सामना नहीं करती छनु मूक हो और सिर झुकाये सहती है। किन्तु जब उससे आलोकित के छाया प्रकाश होता है तब वह गुरुआसिंह ने वेष में भाग जाती है। गंगा बेगम के चरित पर प्रकाश डालते हुए सियारामशरण प्रसाद लिखते हैं —
“गाज़ा बेगम मीन प्रेमिका का स्वर्गिम दीप है, जिसके प्रकाश में उण्णता तो है परंतु सूर्य की तरह प्रचण्डता नहीं, उसके आलोक में जीवन का स्वनिम्त होता है।"133

अंत में गाज़ा का सुख-स्वन्ध टूट जाता है। धूमित शिवाजी के हाथों पुनः पड़ जाने पर उसकी वासना का क्षुद्र उपकरण बनना उसे अब सहयोग नहीं। माधव विश्व के पाने के बाद हुसैन की राम्बर से गज़ा को क्या लेना? अंततः स्वच्छ से प्राण त्याग देती है।

कुल मिलाकर गाज़ा बेगम के जीवन में एक के बाद एक कई मुश्किलें आती हैं।
किंतु अंत में वह माधव (कृष्ण) रस पीकर अपना जीवन त्याग देती है। सचमुच
उपन्यासकार ने उनके चरित्र के प्रति सहानुभूति वश्यने का प्रयास किया है।

(२) गोपिकावाई:

पेशवा बालाजीसाहब की पत्नी गोपिकावाई अपने उपर्युक्त व्यक्ति के लिए प्रसिद्ध है। वह अधूरा वय की थी। वह स्वच्छचारी थी अपने आपको पुरुष के बसबार समझती है। उसका खर प्रकाश था, नेत्र तीर्ण थे।

अनिश्चित स्वभाव से पति पेशवा को वह वात-बात पर संचरण करती थी। राजनीतिक पदयात्रा में भाग लेना उसे पसंद था। वह सबके उपर अपना रोब जमाना चाहती थी।

गोपिकावाई के उपर्युक्त परिचय के अलावा और कोई विशेषता देखने को नहीं मिलती।

दूसरे कोटे उपन्यास के नारी-पात्रों की विशिष्टता

‘दूसरे कोटे’ उपन्यास के नारी-पात्रों में नूरबाई और रोनी प्रमुख है। प्रस्तुत
अपन्यास में बलाजी ने नारी-पात्रों का चित्रण अत्यंत चुंबक पूर्वक किया है। उनमें भी नागिका नूरबाई का चरित्र आकर्षक बन पड़ा है। उपन्यास के प्रमुख नारी-पात्रों की विशिष्टताएं इस प्रकार है-
(१) नूरजहां : 

नूरजहांं दूंटे ‘कॉट’ उपन्यास का सबसे महत्वपूर्ण स्त्री-पत्र है। वर्मज्जी ने उसके नर्तकी रूप से नया घर बनाने तक की किया को उपन्यास में कृत्रिमता के साथ चित्रित किया है। उसके चरित्र पर प्रकाश डालने हुए सियासतमार्ग प्रसाधन लिखते हैं—

“निश्चय ही उसका चरित्र गतिशील, भावुकतापूर्ण, उदारसील है जिसके प्रति पाठक का मन अवश्य ही आकृप होता है।”

नर्तकी के रूप में नूरजहांं का चरित्र अपना निज़ी महत्व स्वीकारता है। वह सुन्दर नर्तकी है। सुगंध चमक मुहम्मद शाह और सावत्त्रों उसके रूप-सौंदर्य और कला के प्रति आकृप होकर उससे प्रेम करने लगते हैं। नूरजहांं का नृत्य कूद इस प्रकार है—

“गायिका ने फासी की एक गज़ल गाई फिर जैसे-जैसे लय तेज हुई।
गायिका ने नाच और हाव-भाव के करिस्म प्रेषित लिखते करते।”

नूरजहांं की नृत्य-कला और रूप-सौंदर्य के कारण ही सावत्त्रों उसे प्रेम करने लगता है। जब ईरान के बादशाह के साथ उसका जाना तय हुआ तब सावत्त्रों आमलता भी कर लेता है। इस अनन्य रूप-सौंदर्यमय नारी के रूप सौंदर्य से मुख होकर ही ईरान का बादशाह उसे अपने साथ ले जाना चाहता है। किंतु सावत्त्रों की आमलता मुन वह मोहनलाल जाद के साथ दुश्दावन के मार्ग पर भाग चलती है।

नूरजहांं का मोहन के प्रति लगाय ध्यानकर्षक है। सबसे पहले वह मोहन को एक मामूली सैकड़ी समझती है और मोहन उसे एक नृत्यांगना। किंतु मोहन का उसके प्रति निस्पार्थ प्रेम-भाव बेख वह उसको मोहन (कहने में) के रूप में दिखाई देता है।

दूसरी ओर मोहन को वह सबसे विश्वास पड़ने लगी। दोनों मार्ग में एक-दूसरे के निकट आ जाते हैं। फिर नूरजहांं उसकी बीबी बनने की भी सांगती है। अंत में दोनों पति-पत्नी बनकर साथ रहने लगते हैं।
नूस्वाई संयमशील और सहनशील है। बुल्लावन में नूस्वाई की मोहन की पत्नी रोनी से गुलाकात होती है। नूस्वाई को मालूम हो जाता है कि रोनी मोहन की पत्नी है। किंतु उसको कोई दु:ख नहीं होता बल्कि वह दोनों पति-पत्नी को समझाती है। और रोनी से कहती हैं—

"बहन तुम इनकी सेवा करो। मैं निकल जाती हूँ। किसी मंचिर से चाली जाऊँगी।"135

नूस्वाई कोमल भावनामय नारी है। जब मोहन का मित्र संकेत में पड़ता है और वह तुटा जाता है, तब वह अपने पास सख्त हुए गहने बैठकर उनकी रक्षा करती है। इसका कारण मोहन के प्रति उनके उसकी कोमल भावना है। उसको मोहन के प्रति अव्यंत्रण लगात है। इसीलिए तो जब तुटेरे ने उनको पकड़ लिया तब वह कहती है—

"बाँट मेरी कमर में बंधा है। अभी खोलकर फेंक देती हूँ। मेरे मालिक को छोड़ दो। उनके पास कुछ नहीं है।" 136

नूस्वाई संस्कारी नारी है। वह इसका आदर करना भली-भाँति समझती है। वह चित्रामन और उसकी पत्नी का चुराई पूर्वक आदर करती है। मार्ग में कुई के पास वह बुझिया को देखती है तो उसे प्रणाम करती है। मोहन के सख्त शुद्धराती का वह आदर करती है।

नूस्वाई सहदय नारी है। एक बार मोहन को शुभारी को चित्रामन से चमाने के लिए कुछ रूपों की आवश्यकता होती है। मोहन नूस्वाई से संकेत के साथ अपना वह प्रस्ताव स्थापत है। नूस्वाई को दुःख होता है क्योंकि सामान्य बात के लिए मोहन न इन्तना संकेत किया। वह कहती है—

"मुझको शिकायत है तुमने इतना संकेत करो किया। मेरे पास जब मेरा कुछ भी नहीं है। सब तमाशा है। मैं इस बोझ को कमर में वांधे-वांधे फिसली हूँ।"
तुम कहते थे इसको छूँटा नहीं। मैं कहती हूँ। मुझको कॉटे सागड़ता है यह लो और स्वभाव अपने पास।”

उसमें दूरसौरों के मालों के लिए त्याग करने की भावना प्रकट है। मोहन के प्रेम खािर एवं अपने परशुचालाक के लिए वह अपने नर्कवीं के व्यवसाय द्वारा प्राप्त किये गए जेवर पानी में फेक देती है। अंत में वह कृष्ण भक्ति बनाकर अपना अनन्य महात्म स्वामित्व करती है। नूरबाई के चरित्र की समीक्षा करते हुए शिवकुमार मिश्र लिखते हैं—

“नारी जाति का गोस्वामी उसके चरित्र में साकार हो उठता है। उसकी महानता, उसका निश्चल प्रेम, उसका त्याग सब उसके चरित्र को आकाश की ऊँचाईयों तक ले जाने में समर्थ है।”

निश्चर्तता कहा जा सकता है कि वर्माजी ने नूरबाई के चरित्र का चित्रांकन कर अपने अपूर्त्तरूप वैश्वानर का परिचय दिया है। नर्तकी नूरबाई में उत्कृष्ट नारी के गुण पत्तकों को उनके प्रति विशेष सम्मान उत्तर करनेवाला है। वर्माजी को उसके चरित्रांकन में पूर्वसुधार सफलता मिली है।

(२) रोनी:

रोनी ‘टूटे कॉटे’ उपन्यास के गोस्वामी नारी-प्रतीक में महत्त्वपूर्ण है। वह उपन्यास के नायक मोहनलाल जाट की पत्नी है। मोहनलाल को रोनी के प्रति श्रापाक्षरण है। किन्तु रोनी के कर्मभाष यवहार के कारण ही मोहन अपना गाँव छोड़ देता है। शिवकुमार मिश्र ने रोनी के चरित्र पर प्रकाश डालने हुए कहा है—

“रोनी का चरित्र भी स्वभाविक है। ग्रामीण स्त्रियाँ की सारी प्रतिभाओं उसमें विधायमान है।”

रोनी को विशेष स्वभाव की नारी है। उसमें आकाश प्रचुर मात्रा में है। उसके धर खुश लालसा है। वह धनार्जन के लिए अपने पति और देवर को अनुपित मार्ग में
भेजने में संकृत भी नहीं करती। उसके इस प्रकार के वर्तन के कारण ही उसका देवर दक्षत बन जाता है।

कुल समझकर रोनी एक साधारण कहीं की नारी है। उसका चित्रांकन वर्माजी ने अत्यंत स्वाभाविकता के साथ किया है।

वर्माजी के ऐतिहासिक उपन्यासों का अध्ययन - अनुशीलन करने से सहज ही पता चलता है कि वर्माजी ने पुरुष-पात्रों की अपेक्षा नारी-पात्रों को अधिक महत्व दिया है। उनकी नारियों चोरंगणा है। वह परिस्थिति के अनुकूल अपना युक्ति बदलती रहती है। शिवकुमार भिन्न ने वर्माजी के उपन्यासों के पात्रों की समीक्षा करते हुए लिखा है -

“वर्माजी के उपन्यासों में चरित्रों की जो बहुत सुस्पष्ट उपयोग है उसमें यदि सबसे अधिक किसी का भी चरित्र हमें आकर्षित करता है तो खैर पात्रों विशेषकर नायिकाओं का। वर्माजी के उपन्यासों की नायिकाएं इतनी प्रभावशाली होती हैं कि उनके समुख अन्य सारे चरित्र मध्यम पड़ जाते हैं।”

सच ही वर्माजी की नारियाँ साहसी है। जो गृहपात्रों की अपेक्षा अपना विशेष स्थान बनाते हुए हैं। वर्माजी ने नारी-पात्रों के चित्रांकन में अपनी समस्त शक्तियों को काम पर लगाया था। निश्चय ही उन्होंने नारी-पात्रों को विशेष महत्व दिया है।
<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम</th>
<th>कृति</th>
<th>कर्ता</th>
<th>प.पं.</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>आधुनिक कथा साहित्य और विकास</td>
<td>डॉ. बेंचन</td>
<td>25</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>हिन्दी उपन्यास में चरित्र-चित्रण</td>
<td>डॉ. राजनीति गंगा</td>
<td>11</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>कुछ विचार</td>
<td>प्रेमचंद</td>
<td>38</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>हिन्दी उपन्यासों में चरित्र-चित्रण का विकास</td>
<td>डॉ. राजनीति गंगा</td>
<td>51</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>हिन्दी उपन्यासकला</td>
<td>डॉ. प्रतापचरण टैंडर</td>
<td>161</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>हिन्दी उपन्यास सिद्धांत और समीक्षा</td>
<td>डॉ. महादेव शर्मा</td>
<td>50</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>झॉली की सानी</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>29</td>
</tr>
<tr>
<td>8</td>
<td>अहिल्याबाई</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>77</td>
</tr>
<tr>
<td>9</td>
<td>विराटा की पद्मावतi</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>14</td>
</tr>
<tr>
<td>10</td>
<td>गढ़ खुंडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>104</td>
</tr>
<tr>
<td>11</td>
<td>श्री वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यासों में नाथिका परिकल्पना</td>
<td>डॉ. पी.के. इन्द्रजीत</td>
<td>19</td>
</tr>
<tr>
<td>12</td>
<td>उपन्यासकार प्रेमचंद</td>
<td>डॉ. सुरेशचन्द्र गुप्त</td>
<td>147</td>
</tr>
<tr>
<td>13</td>
<td>वृंदावनलाल वर्मा : साहित्य और समीक्षा</td>
<td>सियाराबाबा साहेब</td>
<td>233</td>
</tr>
<tr>
<td>14</td>
<td>हिन्दी के श्रेष्ठ उपन्यास और उपन्यासकार</td>
<td>द्राविख प्रसाद सरसना</td>
<td>83</td>
</tr>
<tr>
<td>15</td>
<td>कचनार</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>254</td>
</tr>
<tr>
<td>16</td>
<td>गढ़ खुंडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>104-</td>
</tr>
<tr>
<td>17</td>
<td>गढ़ खुंडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>112</td>
</tr>
<tr>
<td>18</td>
<td>गढ़ खुंडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>188</td>
</tr>
<tr>
<td>19</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>240</td>
</tr>
<tr>
<td>20</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>240</td>
</tr>
<tr>
<td>21</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>231</td>
</tr>
<tr>
<td>22</td>
<td>वृंदावनलाल वर्मा: साहित्य और समीक्षा</td>
<td>सियाबाबुशरण प्रसाद</td>
<td>113</td>
</tr>
<tr>
<td>23</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>25</td>
</tr>
<tr>
<td>24</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>214</td>
</tr>
<tr>
<td>25</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>212</td>
</tr>
<tr>
<td>26</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>266</td>
</tr>
<tr>
<td>27</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>111</td>
</tr>
<tr>
<td>28</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>214</td>
</tr>
<tr>
<td>29</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>169</td>
</tr>
<tr>
<td>30</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>234</td>
</tr>
<tr>
<td>31</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>10</td>
</tr>
<tr>
<td>32</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>13</td>
</tr>
<tr>
<td>33</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>11</td>
</tr>
<tr>
<td>34</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>168</td>
</tr>
<tr>
<td>35</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>226</td>
</tr>
<tr>
<td>36</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>258</td>
</tr>
<tr>
<td>37</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>168-</td>
</tr>
<tr>
<td>38</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>165</td>
</tr>
<tr>
<td>39</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>260</td>
</tr>
<tr>
<td>40</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>220</td>
</tr>
<tr>
<td>41</td>
<td>गढ भूडार</td>
<td>डॉ. वृंदावनन्दलाल वर्मा</td>
<td>223</td>
</tr>
<tr>
<td>नं.</td>
<td>उपयोगकर्ता</td>
<td>तालिकार्य</td>
<td>समाधान</td>
</tr>
<tr>
<td>-----</td>
<td>------------</td>
<td>------------</td>
<td>--------</td>
</tr>
<tr>
<td>41</td>
<td>गड़ कुंडार</td>
<td>डॉ. दुंदाबनलाल वर्मा</td>
<td>250</td>
</tr>
<tr>
<td>42</td>
<td>गड़ कुंडार</td>
<td>डॉ. दुंदाबनलाल वर्मा</td>
<td>68</td>
</tr>
<tr>
<td>43</td>
<td>गड़ कुंडार</td>
<td>डॉ. दुंदाबनलाल वर्मा</td>
<td>28</td>
</tr>
<tr>
<td>44</td>
<td>गड़ कुंडार</td>
<td>डॉ. दुंदाबनलाल वर्मा</td>
<td>254</td>
</tr>
<tr>
<td>45</td>
<td>उपयोगकर्ता दुंदाबनलाल वर्मा</td>
<td>डॉ. शशिकृष्ण सिंधिल</td>
<td>1056</td>
</tr>
<tr>
<td>46</td>
<td>कचनार</td>
<td>डॉ. दुंदाबनलाल वर्मा</td>
<td>20</td>
</tr>
<tr>
<td>47</td>
<td>कचनार</td>
<td>डॉ. दुंदाबनलाल वर्मा</td>
<td>308- 109</td>
</tr>
<tr>
<td>48</td>
<td>कचनार</td>
<td>डॉ. दुंदाबनलाल वर्मा</td>
<td>28</td>
</tr>
<tr>
<td>49</td>
<td>कचनार</td>
<td>डॉ. दुंदाबनलाल वर्मा</td>
<td>91</td>
</tr>
<tr>
<td>50</td>
<td>कचनार</td>
<td>डॉ. दुंदाबनलाल वर्मा</td>
<td>209</td>
</tr>
<tr>
<td>51</td>
<td>कचनार</td>
<td>डॉ. दुंदाबनलाल वर्मा</td>
<td>211</td>
</tr>
<tr>
<td>52</td>
<td>कचनार</td>
<td>डॉ. दुंदाबनलाल वर्मा</td>
<td>211</td>
</tr>
<tr>
<td>53</td>
<td>दुंदाबनलाल वर्मा साहित्य और समीक्षा</td>
<td>सियासतशरण प्रसाद</td>
<td>154</td>
</tr>
<tr>
<td>54</td>
<td>कचनार</td>
<td>डॉ. दुंदाबनलाल वर्मा</td>
<td>12</td>
</tr>
<tr>
<td>55</td>
<td>कचनार</td>
<td>डॉ. दुंदाबनलाल वर्मा</td>
<td>68</td>
</tr>
<tr>
<td>56</td>
<td>कचनार</td>
<td>डॉ. दुंदाबनलाल वर्मा</td>
<td>33</td>
</tr>
<tr>
<td>57</td>
<td>कचनार</td>
<td>डॉ. दुंदाबनलाल वर्मा</td>
<td>101</td>
</tr>
<tr>
<td>58</td>
<td>ऐतिहासिक उपयोगकर्ता दुंदाबनलाल वर्मा</td>
<td>रामदर्श मिश्र</td>
<td>53</td>
</tr>
<tr>
<td>59</td>
<td>कचनार</td>
<td>डॉ. दुंदाबनलाल वर्मा</td>
<td>12</td>
</tr>
<tr>
<td>60</td>
<td>कचनार</td>
<td>डॉ. दुंदाबनलाल वर्मा</td>
<td>114</td>
</tr>
<tr>
<td>61</td>
<td>झाँसी की रानी</td>
<td>डॉ. दुंदाबनलाल वर्मा</td>
<td>26</td>
</tr>
<tr>
<td>62</td>
<td>झाँसी की रानी</td>
<td>डॉ. दुंदाबनलाल वर्मा</td>
<td>26</td>
</tr>
<tr>
<td>विषय</td>
<td>लेखक</td>
<td>पृष्ठ</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>-------------------------------</td>
<td>-------------------------</td>
<td>-------</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>झौंसी की रानी</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>25</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>झौंसी की रानी</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>60</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>झौंसी की रानी</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>51</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>झौंसी की रानी</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>44</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यासों का सांस्कृतिक अध्ययन</td>
<td>डॉ. उषा भटनागर</td>
<td>10</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>झौंसी की रानी</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>150</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>झौंसी की रानी</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>95</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>वृंदावनलाल वर्मा साहित्य और समीक्षा</td>
<td>सिंधियामशरण प्रसाद</td>
<td>166</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>झौंसी की रानी</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>89</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>झौंसी की रानी</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>255</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यास-और उपन्यासकार</td>
<td>डॉ. ज्ञानिकाप्रसाद गुप्त</td>
<td>69</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>झौंसी की रानी</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>50</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>झौंसी की रानी</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>266</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>झौंसी की रानी</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>332</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>झौंसी की रानी</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>201</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>झौंसी की रानी</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>50</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>झौंसी की रानी</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>260</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>मृगन्यनी</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>1</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>मृगन्यनी</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>38</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>मृगन्यनी</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>230</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यास और उपन्यासकार</td>
<td>डॉ. ज्ञानिकाप्रसाद गुप्त</td>
<td>76</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>पंक्ति</td>
<td>साहित्य (पत्रिका)</td>
<td>साहित्यशास्त्रकार</td>
<td>पृष्ठभमान</td>
</tr>
<tr>
<td>-------</td>
<td>------------------</td>
<td>------------------</td>
<td>-----------</td>
</tr>
<tr>
<td>84</td>
<td>मुगनधनी</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>245</td>
</tr>
<tr>
<td>85</td>
<td>हिंदी के विषय साहित्य और साहित्यकार</td>
<td>डॉ. ब्राह्मणप्रसाद साहसेना</td>
<td>७६</td>
</tr>
<tr>
<td>86</td>
<td>वृंदावनलाल वर्मा साहित्य और साहित्य</td>
<td>सिन्याबाईशंरण प्रसाद</td>
<td>२३४</td>
</tr>
<tr>
<td>87</td>
<td>मुगनधनी</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>२५</td>
</tr>
<tr>
<td>88</td>
<td>वृंदावनलाल वर्मा साहित्य और कला</td>
<td>शिवकुमार मिश्र</td>
<td>८०-८३</td>
</tr>
<tr>
<td>89</td>
<td>वृंदावनलाल वर्मा साहित्य और कला</td>
<td>शिवकुमार मिश्र</td>
<td>८१</td>
</tr>
<tr>
<td>90</td>
<td>वृंदावनलाल वर्मा साहित्य और कला</td>
<td>शिवकुमार मिश्र</td>
<td>८२</td>
</tr>
<tr>
<td>91</td>
<td>अहिल्याबाई</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>६८</td>
</tr>
<tr>
<td>92</td>
<td>अहिल्याबाई</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>६४</td>
</tr>
<tr>
<td>93</td>
<td>अहिल्याबाई</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>६७</td>
</tr>
<tr>
<td>94</td>
<td>वृंदावनलाल वर्मा साहित्य और साहित्य</td>
<td>सिन्याबाईशंरण प्रसाद</td>
<td>२३६</td>
</tr>
<tr>
<td>95</td>
<td>अहिल्याबाई</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>४०</td>
</tr>
<tr>
<td>96</td>
<td>अहिल्याबाई</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>२२</td>
</tr>
<tr>
<td>97</td>
<td>अहिल्याबाई</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>२३४</td>
</tr>
<tr>
<td>98</td>
<td>अहिल्याबाई</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>१४२</td>
</tr>
<tr>
<td>99</td>
<td>अहिल्याबाई</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>३६</td>
</tr>
<tr>
<td>100</td>
<td>भुवन-विक्रम</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>१५०</td>
</tr>
<tr>
<td>101</td>
<td>वृंदावनलाल वर्मा साहित्य और साहित्य</td>
<td>सिन्याबाईशंरण प्रसाद</td>
<td>८७६</td>
</tr>
<tr>
<td>102</td>
<td>भुवन-विक्रम</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>१८८</td>
</tr>
<tr>
<td>103</td>
<td>भुवन-विक्रम</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>१०६</td>
</tr>
<tr>
<td>104</td>
<td>भुवन-विक्रम</td>
<td>डॉ. वृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>२४७</td>
</tr>
<tr>
<td>नं</td>
<td>नाम</td>
<td>उपन्यासकार</td>
<td>पन्ना</td>
</tr>
<tr>
<td>-----</td>
<td>------------------</td>
<td>-------------------</td>
<td>------</td>
</tr>
<tr>
<td>१०५</td>
<td>भुवन-विक्रम</td>
<td>डॉ. बृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>३१</td>
</tr>
<tr>
<td>१०६</td>
<td>भुवन-विक्रम</td>
<td>डॉ. बृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>३६</td>
</tr>
<tr>
<td>१०७</td>
<td>भुवन-विक्रम</td>
<td>डॉ. बृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>१६३</td>
</tr>
<tr>
<td>१०८</td>
<td>भुवन-विक्रम</td>
<td>डॉ. बृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>६६</td>
</tr>
<tr>
<td>१०९</td>
<td>भुवन-विक्रम</td>
<td>डॉ. बृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>४२</td>
</tr>
<tr>
<td>११०</td>
<td>महारानी दुर्गावती</td>
<td>डॉ. बृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>३१६</td>
</tr>
<tr>
<td>१११</td>
<td>महारानी दुर्गावती</td>
<td>डॉ. बृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>३२८</td>
</tr>
<tr>
<td>११२</td>
<td>महारानी दुर्गावती</td>
<td>डॉ. बृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>८</td>
</tr>
<tr>
<td>११३</td>
<td>महारानी दुर्गावती</td>
<td>डॉ. बृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>२६३</td>
</tr>
<tr>
<td>११४</td>
<td>महारानी दुर्गावती</td>
<td>डॉ. बृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>२३२</td>
</tr>
<tr>
<td>११५</td>
<td>हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यास और उपन्यासकार</td>
<td>डॉ. ढारिकानाथ सरसेना</td>
<td>६५</td>
</tr>
<tr>
<td>११६</td>
<td>बृंदावनलाल वर्मा के उपन्यासों का सांस्कृतिक अध्ययन</td>
<td>डॉ. उस्मानागर</td>
<td>६५</td>
</tr>
<tr>
<td>११७</td>
<td>रामगढ़ की रानी</td>
<td>डॉ. बृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>१०४</td>
</tr>
<tr>
<td>११८</td>
<td>रामगढ़ की रानी</td>
<td>डॉ. बृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>१८४</td>
</tr>
<tr>
<td>११९</td>
<td>रामगढ़ की रानी</td>
<td>डॉ. बृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>१६४</td>
</tr>
<tr>
<td>१२०</td>
<td>रामगढ़ की रानी</td>
<td>डॉ. बृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>२६३</td>
</tr>
<tr>
<td>१२१</td>
<td>रामगढ़ की रानी</td>
<td>डॉ. बृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>१६६</td>
</tr>
<tr>
<td>१२२</td>
<td>रामगढ़ की रानी</td>
<td>डॉ. बृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>१०५</td>
</tr>
<tr>
<td>१२३</td>
<td>रामगढ़ की रानी</td>
<td>डॉ. बृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>१३२</td>
</tr>
<tr>
<td>१२४</td>
<td>रामगढ़ की रानी</td>
<td>डॉ. बृंदावनलाल वर्मा</td>
<td>१२०-१४८</td>
</tr>
<tr>
<td>प्रमाण</td>
<td>नाम</td>
<td>लेखक</td>
<td>पृष्ठ</td>
</tr>
<tr>
<td>-------</td>
<td>----------------------------------</td>
<td>---------------------</td>
<td>-------</td>
</tr>
<tr>
<td>125</td>
<td>रामगढ़ की सानी</td>
<td>डॉ. दुरंदावनलाल वर्मा</td>
<td>29</td>
</tr>
<tr>
<td>126</td>
<td>मुसाहिबजु</td>
<td>डॉ. दुरंदावनलाल वर्मा</td>
<td>19</td>
</tr>
<tr>
<td>127</td>
<td>मुसाहिबजु</td>
<td>डॉ. दुरंदावनलाल वर्मा</td>
<td>62</td>
</tr>
<tr>
<td>128</td>
<td>मुसाहिबजु</td>
<td>डॉ. दुरंदावनलाल वर्मा</td>
<td>62</td>
</tr>
<tr>
<td>129</td>
<td>दुरंदावनलाल वर्मा साहित्य और समीक्षा</td>
<td>सियामशरण प्रसाद</td>
<td>132</td>
</tr>
<tr>
<td>130</td>
<td>उपन्यासकार : दुरंदावनलाल वर्मा</td>
<td>शशिभूषण सिंधव</td>
<td>83</td>
</tr>
<tr>
<td>131</td>
<td>माधवजी सिंधिया</td>
<td>डॉ. दुरंदावनलाल वर्मा</td>
<td>212</td>
</tr>
<tr>
<td>132</td>
<td>दुरंदावनलाल वर्मा साहित्य और समीक्षा</td>
<td>सियामशरण प्रसाद</td>
<td>199</td>
</tr>
<tr>
<td>133</td>
<td>दुरंदावनलाल वर्मा साहित्य और समीक्षा</td>
<td>सियामशरण प्रसाद</td>
<td>161</td>
</tr>
<tr>
<td>134</td>
<td>दूटे कॉटे</td>
<td>डॉ. दुरंदावनलाल वर्मा</td>
<td>32</td>
</tr>
<tr>
<td>135</td>
<td>दूटे कॉटे</td>
<td>डॉ. दुरंदावनलाल वर्मा</td>
<td>263</td>
</tr>
<tr>
<td>136</td>
<td>दूटे कॉटे</td>
<td>डॉ. दुरंदावनलाल वर्मा</td>
<td>265</td>
</tr>
<tr>
<td>137</td>
<td>दूटे कॉटे</td>
<td>डॉ. दुरंदावनलाल वर्मा</td>
<td>236</td>
</tr>
<tr>
<td>138</td>
<td>दुरंदावनलाल वर्मा : उपन्यास और कला</td>
<td>शिवकुमार मिश्र</td>
<td>11</td>
</tr>
<tr>
<td>139</td>
<td>दुरंदावनलाल वर्मा : उपन्यास और कला</td>
<td>शिवकुमार मिश्र</td>
<td>10</td>
</tr>
<tr>
<td>140</td>
<td>दुरंदावनलाल वर्मा : उपन्यास और कला</td>
<td>शिवकुमार मिश्र</td>
<td>185</td>
</tr>
</tbody>
</table>